भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 7 **दिसम्बर** 2006 **अंक** 12

किताबें

जब
नहीं रहतीं
दादी-नानी, बड़े-बुजुर्ग
या बड़े-बड़े संत-महात्मा
तब जीवन के महाप्रलय में
या तृष्णाओं के मकड़जाल में
किसी प्रशिक्षित व अनुभवी मल्लाह की तरह
उन संकटों से उबारती हैं किताबें

कभी गीता, कुरान, कभी रामायण, बाइबिल
या कोई गुटका उपदेशों का बन,
हमारी समस्याओं को...
जिनका महज स्पर्श व उच्चारण तक भी
लगा देता है पार
त्रस्त मनों को वैसे ही
जैसे उबर गई थी
पाषाण हुई अहिल्या
भगवान श्रीराम के चरणों के पावन स्पर्श भर से

अगर
न होती पुस्तकें
तो कहाँ होता हमारे पास वह
जिसे हम कहते हैं ज्ञान-विज्ञान,
आध्यात्म, योग, दर्शन व
हमारे ऋषि-मुनियों का तप-त्याग
जिस पर भी करते हैं हम अहम
वह सभी मिला है हमें महज पुस्तकों से ही

अगर
न होती पुस्तकें
तो कौन बताता हमें कि—
कौन थे शांतनु, पितामह भीष्म या दशरथ,
आदिगुरु शंकराचार्य या महर्षि वेद व्यास
ईव और आदम या बाबा नानक
या किसने बनाया गुरुत्वाकर्षण नियम ?
कैसे चलता पता कि—
भारत ही था कभी ज्ञान के क्षेत्र में विश्वगुरु...

पुस्तकें ही हैं आदि स्रोत
हमारी चिंतनधाराओं और
ज्ञान की अक्षुण्ण परम्पराओं की

न होती पुस्तकें
तो कुछ भी कैसे मिलता हमें

शेष पृष्ठ 13 पर

स्वतंत्रता-पूर्व स्थापित हिन्दीसेवी संस्थाएँ

स्वतंत्रता के पूर्व देश में पुस्तक और पाठक के बीच जो निकटता थी, आज वह देखने को नहीं मिलती। पुस्तकें हैं, पर पाठक नहीं, पाठक हैं, पर पुस्तकें नहीं। राजनीतिक वातावरण में देश आज साहित्य से दूर हो गया है, साहित्य यानी समाज, समाज यानी मनुष्य, मनुष्य यानी संवेदनायुक्त प्राणी।

शिक्षा-संस्थाएँ (स्कूल-कॉलेज, विश्वविद्यालय) विशाल संख्या में शिक्षितों का उत्पादन कर रही हैं, किन्तु उन्हें मनुष्य नहीं, उत्पादक ज्ञान का माध्यम बना रही हैं। ज्ञान आज शक्ति बन गया है, किन्तु संवेदनाशून्य। देश के निर्माण और विकास के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएँ बना रहे, विशाल धनराशि व्यय करने की बात करते हैं; किन्तु किसके लिए, नेताओं, राजनीतिज्ञों, नीति-निर्धारकों के अपने लिए, अपने सुखमय सुरक्षित भविष्य के लिए।

क्या देश के इन निर्माताओं ने देश को जानने की कोशिश की है, उसके अन्तर्मन को पढ़ा है ? आज देश में कितनी आत्महत्याएँ रोज हो रही हैं, सत्ता के संघर्ष में हत्याएँ हो रही हैं, अपहरण हो रहा है, नैतिक पतन हो रहा है। प्रदेश और देश का विशाल प्रशासन क्या इनके प्रति संवेदनशील है ?

आज अनेक प्रश्न उठ रहे हैं। ऐसा क्यों ? जब तक देश में त्याग और बलिदान की भावना थी, जनता भी निष्ठावान थी, वह आत्मिक विकास के प्रति सजग थी। लेखक और पाठक के बीच संवाद बना हुआ था। साहित्य के प्रति समाज में अभिरुचि थी। समस्याओं का निदान साहित्यकारों की रचनाओं में मिलता था। साहित्यकार अपनी रचनाओं में समय और समाज का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करते थे। भारतेन्दु, प्रसाद, प्रेमचंद, शरत, देवकीनंदन खत्री आदि की पुस्तकें मनोरंजन ही नहीं प्रेरणा की भी माध्यम थीं। किन्तु, जैसे-जैसे देश राजसत्ताभोगी हो गया, उसने नरसी भगत के मंत्र 'वैष्णव जन तो तेने कहिए, पीर पराई जाने रे' को बिल्कुल भुला दिया।

स्वतंत्रता के पूर्व कैसी-कैसी साहित्यिक संस्थाएँ बनीं, काशी में नागरी प्रचारिणी सभा, उसी के प्रयास से इलाहाबाद में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, किन्तु सत्ता के व्यामोह ने इन संस्थाओं को निजी महत्वाकांक्षा का माध्यम बनाकर उन्हें निर्जीव कर दिया। एक समय उनसे जो ऊर्जा निकलती थी, उससे नगर ही नहीं, प्रदेश-देश प्रेरित और प्रोत्साहित होता था। इन संस्थाओं को आज देश की समस्त हिन्दीभाषी संस्थाओं का नेतृत्व करना चाहिए था। हिन्दी भाषा तथा साहित्य की समस्त जानकारियाँ इन संस्थाओं में उपलब्ध होनी चाहिए। इनके पुस्तकालय ऐसे समृद्ध होने चाहिए जहाँ हिन्दी भाषा तथा साहित्य के अद्यतन प्रकाशित ग्रन्थ और पत्र-पत्रिकाएँ सुलभ हों। समस्त साहित्यकारों के चित्र तथा परिचय उपलब्ध होने चाहिए। वेबसाइट पर अपेक्षित जानकारियाँ मिलती रहें ताकि देश-विदेश के शोधकर्मियों को अपेक्षित सामग्री उपलब्ध हो सके। यह सूचना का युग है, सूचना के माध्यम से ज्ञान के अनेक स्रोत मुक्त होते हैं।

अहिन्दीभाषी क्षेत्र—गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, पूर्वोत्तर प्रदेश आदि की संस्थाएँ हिन्दी का प्रचार-प्रसार ही नहीं उसे पुष्पित और पल्लवित भी कर रही हैं, जबकि हिन्दीभाषी क्षेत्र हिन्दी को केवल भुना रहे हैं।

शेष पृष्ठ 5 पर

प्रेमचंद : सामंत का मुंशी
अर्थात्
कफ़न का कुपाठ

—डॉ० बच्चन सिंह

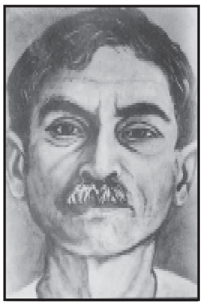

डॉ० धर्मवीर प्राय: ऐसी पुस्तकें लिखते हैं जो उन्हें अखबारी सुर्खियाँ देती हैं। अखबारी सुर्खियाँ तो दूसरे दिन पुरानी पड़ जाती हैं। ऐसी स्थितियों में उन्हें दुबारा कुछ सनसनी खोजना पड़ता है। यह उसी खोज का उत्पाद है। लोगबाग प्रेमचंद को सामंत-विरोधी सिद्ध किया करें, धर्मवीर ने लोगों के विचार को उलट कर प्रेमचंद को सिर के बल खड़ा कर दिया है। इसके लिए उन्हें खुद भी शीर्षासन करना पड़ा है। दलित लेखक उन्हें अपने गिरोह में कहाँ सिचुएट करते हैं, साफ नहीं है। दलित-लेखन को उन्होंने कितना समृद्ध बनाया है यह तो दलित ही जाने पर उनके कारण हानि ज़रूर हुई है। वे सिक्खों की तरह एक नया धर्म बनाना चाहते थे, बाबा साहब के नव बौद्ध हो जाने पर नाराज़ थे। पर वे सिक्खों की बलिदानी क्षमता कहाँ से लाएँगे? लेखन में तो उन्होंने एक जाति ही बना ली है। ‘‘जब भंगी लिख रहा है तो दूसरों को उसकी तरफ से लिखने पर निरत हो जाना चाहिए।’’ ...‘‘दलित साहित्य के लेखन को लेकर गैर दलित लेखकों से काम बिगड़ता है, सुधरता नहीं।’’ इस पुस्तक में उनका सारा जोर दलित स्त्रियों के साथ बलात्कार को लेकर है। दलित स्त्रियों के साथ बलात्कार का वर्णन प्रेमचंद साहित्य में भी है। इस पर दलितों की मारक प्रतिक्रिया का चित्रांकन भी उन्होंने किया है। दलित साहित्यकार अपने को अलग कर क्रान्ति की अलख जगा रहे हैं। इस तरह वे साहित्य के माध्यम से वर्णाश्रम धर्म को पुष्ट कर रहे हैं। इसमें प्रेमचंद के चरित्र-हनन को तालिबानी प्रयास अवश्य मिलेगा।

कफ़न के बारे में वे लिखते हैं। स्मरण रखना चाहिए पुस्तक के केन्द्र में कफ़न कहानी है। ‘‘चमारों के बारे में लिखी गई कफ़न का नौ बटा आठ भाग अनकहा रह गया है जो प्रेमचंद के पेट में है।’’ वे आगे लिखते हैं, ‘‘केवल साहित्य की दलित समीक्षा उस पूरे आइसबर्ग को बाहर लायेगी?’’ दलित साहित्य का रचनात्मक साहित्य तो प्राय: लोगों ने देखा है कि समीक्षा का आदर्श मॉडल या सौन्दर्यशास्त्र धर्मवीर तैयार कर रहे हैं। धर्मवीर खूब पढ़े हुए व्यक्ति हैं। उम्मीद नहीं की जाती कि उन्होंने लिंबाले का सौन्दर्यशास्त्र न देखा हो।

वे प्रेमचंद को कहानी लिखना सिखा रहे हैं—‘‘सारी कहानी नये सिरे से स्पष्ट हो जाती यदि प्रेमचंद इस कहानी की आखिरी लाइन में इस कहानी का यह सच लिख देते कि बुधिया गाँव के जमींदार लौंडे से गर्भवती थी। उसने बुधिया से खेत में बलात्कार किया था। तब शब्द दीपक की तरह जल उठते और सब कुछ समझ में आ जाता।’’ धर्मवीर को क्या पता कि कहानी का दीपक बुझ जाता। यह है कहानी कहानी का आठ बटे नौ। धर्मवीर अपने पेट की बात प्रेमचंद पेट में डाल देते हैं। प्रेमचंद कलाकार थे। धर्मवीरीय सपाटबयानी से उनका सरोकार हो ही नहीं सकता। पुस्तक में बलात्कार की भूरिश: चर्चा है। अपनी गणितीय समीक्षा वे खुद कहानी के साथ बलात्कार करते हैं। दलितों की समस्या को वे अर्थ से नहीं, जातीय अपमान से नहीं जोड़ते। मार्क्स को खूँटी पर टाँग देते हैं। फ्रायड के सामने कटोरा लेकर खड़े हो जाते हैं।

धर्मवीर को ‘चमार’ शब्द के प्रयोग पर घोर आपत्ति है। वह कहता है—‘कफ़न’ पर बाहर जाने की जरूरत क्यों है? इसके दो कारण हैं।... प्रेमचंद ने इस कहानी में ‘चमार’ शब्द का प्रयोग किया है। यह घीसू - माधव की कहानी नहीं ‘चमार घीसू’ ‘चमार माधव’ की कहानी है... बुधिया मात्र बुधिया नहीं ‘चमारी बुधिया’ है। धर्मवीर प्रेमचंद को ‘कुनबे’ का अर्थ भी बताते हैं। वे स्वयं मेरठ के निवासी हैं और मेरठ में ‘कुनबे’ का प्रयोग बहुत बड़े कुटुम्ब से होता है। यदि धर्मवीर को इसके अर्थ पर सन्देह था तो ‘सभा’ का हिन्दीकोश देख लेते। इसका अर्थ खानदान भी होता है।

ज़मींदार को दयालु स्वभाव का कह देने पर वे बेहद ख़फा हैं। हो सकता है कि मेरठ के ज़मींदार क्रूर ही हैं। पर पूर्वांचल के ज़मींदार उदार भी होते थे। विपत्ति के समय वे दलितों की रुपये-पैसे, अन्न आदि से सहायता भी करते थे। प्रेमचंद ने ज़मींदार को दयालु कहकर भारी अपराध किया। इतने बड़े अपराध को धर्मवीर जैसा जज क्षमा करने की गलती नहीं कर सकता था। वे प्रेमचंद की एक रचनागत कमजोरी को उद्धृत करते है—‘‘जिस समाज में....उठाते।’’ यह रचनागत कमजोरी अवश्य है। प्रेमचंद के कथा-साहित्य में कमोबेश यह कमजोरी सर्वत्र मिलती है। उस काल के पश्चिमी उपन्यासों में भी यह दोष दिखाई पड़ता है। धर्मवीर के बहुत पहले बहुत से लोगों ने इसे दिखाया है। यह धर्मवीर की खोज नहीं, पहले की चर्वित-चर्वण है।

वह नंबूदरीपाद, अनिता भारती आदि का विरोध करता है क्योंकि उन्होंने प्रेमचंद को एक व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया है। धर्मवीर की तरह साम्प्रदायिक और संकीर्ण जातिवादी दृष्टिकोण से नहीं देखते। प्रेमचंद पर अपनी बचकानी झल्लाहट का आरोप करते हुए उनके चरित्र-हनन का भी भोंडा प्रयास किया है। काश, वे पाश्चात्य कलाकारों की जीवनियाँ देख लेते! वहाँ के आलोचक साहित्य के पाठ पर ध्यान देते हैं, उसे अपने ढंग से ‘डी-कॉन्स्ट्रक्ट’ करते हैं न कि उनके व्यक्तिगत जीवन में सेंध लगाते हैं। पाठ तो अपनी जगह रहता है, उसका निर्वचन (इंटरप्रेटेशन) बदलता रहता है। धर्मवीर तो प्रेमचंद के पाठ में अपना पाठ घुसेड़ देते हैं। इस तरह मूल पाठ को कुपाठ बना देते हैं और अपने को कुपाठी आलोचक। क्या दलित लेखकों का यही सौन्दर्यशास्त्र है?

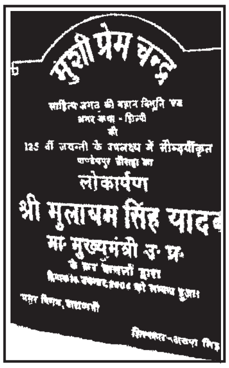

मुंशी प्रेम चन्द्र

125 वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में सौन्दर्यीकृत

लोकार्पण

श्री मुलायम सिंह याद

मा० मुख्यमंत्री उ० प्र०

मुंशी प्रेम चन्द्र

16 नवम्बर 2006 को उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री मुलायम सिंह ने वाराणसी में मुक्तहस्त से बेरोजगारी भत्ता तथा कन्या विद्या धन का वितरण किया। इसी दिन वाराणसी जनपद में 56 परियोजनाओं का शिलान्यास और 29 का लोकार्पण भी किया।

इसी क्रम में साहित्य जगत की महान् विभूति एवं अमर कथा-शिल्पी प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में सौन्दर्यकृत पाण्डेयपुर चौराहा का भी लोकार्पण किया। उत्तर प्रदेश सरकार ने इस लोकार्पण द्वारा मुंशी प्रेमचंद के नाम में सुधार (?) कर दिया—

मुंशी प्रेम चन्द्र

यह है उत्तर प्रदेश की समाजवादी सरकार की साहित्यिक संवेदनशीलता। 125 वर्ष बाद प्रेमचंद का नया नामकरण हो गया।

‘‘वस्तुत: ‘प्रेमचंद’ एक शब्द है, दो खण्डों में नहीं। इसी प्रकार शब्द ‘चंद’ है ‘चन्द्र’ नहीं। यह महान साहित्यकार प्रेमचंदजी का भी अपमान है और हिन्दी का भी। वर्तनी शुद्ध की जानी चाहिए। इस शिलापट्ट को हिन्दीभाषी, गैर हिन्दीभाषी और हिन्दीप्रेमी विदेशी विद्वान् भी देखेंगे।’’

—श्रीप्रसाद

साहित्य का अथक साधक
डॉ० रामचन्द्र तिवारी

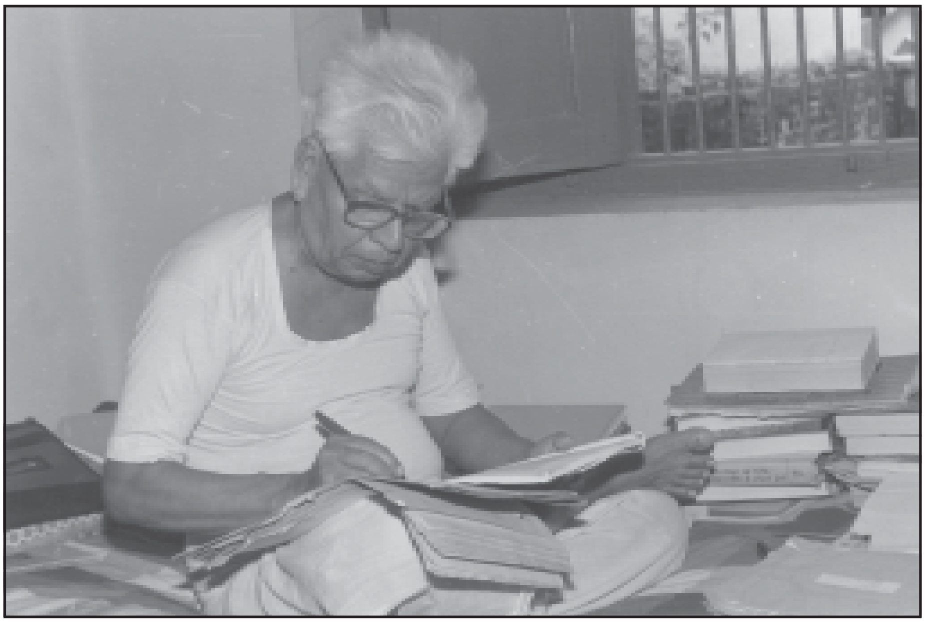

साहित्यिक-सांस्कृतिक बहसों में बराबर साझीदार होने के बावजूद बिना किसी विवाद में पड़े, बगैर किसी साहित्यिक गिरोह में शामिल हुए, हिन्दी साहित्य-जगत में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लेने वाले साहित्य के अथक साधक का नाम है आचार्य रामचन्द्र तिवारी। अपनी उम्र के नवें दशक में चल रहे आचार्य तिवारी की साहित्यिक सक्रियता किसी के लिए भी प्रेरक और चुनौतीपूर्ण है। बीस से अधिक मौलिक, दो अनूदित, सात सम्पादित पुस्तकों के अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण संग्रह-ग्रन्थों में अस्सी से अधिक श्रेष्ठ आलोचनात्मक निबन्ध, विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित डेढ़-सौ के लगभग निबन्ध हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाले हैं।

यह एक सहज जिज्ञासा का विषय है कि आचार्य रामचन्द्र तिवारी इतना कुछ कैसे कर सके तो इसका सीधा सा जवाब है अपनी तपस्वी दिनचर्या के साथ साहित्य को धर्म की तरह जीने के कारण। आज भी आचार्य तिवारी चार बजे भोर में उठ जाते हैं और ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजे रात तक अपने साहित्यकर्म में जुटे रहते हैं। यद्यपि स्वास्थ्य उनका साथ नहीं दे रहा है फिर भी वे हार मानने वाले साधक नहीं हैं। गत वर्ष अगस्त माह में वे फिसल कर गिर पड़े थे और छह-सात महीने उनकी मौत से मुठभेड़ चलती रही। उनके शुभेच्छु भी निराश होने लगे थे, मगर जीत हुई तो आचार्य तिवारी की। अस्वस्थता की दशा में ही वे एक रात उठ बैठे और 'शिव पार्वती विवाह का रहस्य' लिख डाला और फिर लिखने का क्रम चल निकला। उनकी तीन नयी पुस्तकें आने ही वाली हैं—'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनके समकालीन आलोचक', 'आधुनिक हिन्दी साहित्य : विविध आयाम', 'पत्रों के आलोक में डॉ० रामचन्द्र तिवारी'। 'हिन्दी का गद्य-साहित्य' का नवीनतम संस्करण भी प्रेस में है, जिसमें 2006 की पुस्तकों पर भी दृष्टि डाली गयी है।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नामित पुरस्कार, साहित्य भूषण सम्मान और हाल ही में 'हिन्दी गौरव' सम्मान के अलावा अनेक सम्मानों से सम्मानित आचार्य तिवारी का धर्म ही है लिखना। सवाल करने पर (आचार्य तिवारी को अब बहुत कम सुनाई पड़ता है, इसलिए ज्यादातर बातें लिखित ही हो पाती हैं। इस कार्य में उनके सुपुत्र डॉ० प्रेमव्रत तिवारीजी मदद करते हैं। लिखते वक्त तिवारीजी बिस्तर पर ही बैठ जाते हैं। किसी मोटी किताब को हार्डबोर्ड की तरह गोद में रख लेते हैं और प्रश्नों के लिखित जवाब दे देते हैं। बीच-बीच में मौखिक भी चलता रहता है।) वे कहते हैं, ''मैंने कभी किसी सम्मान-प्राप्ति के लिए कुछ नहीं लिखा। लिखना-पढ़ना मेरा शील है। मेरे जीवन का अंग है। मेरी प्राय: सभी पुस्तकें सम्मानित हुई हैं। जबकि उनको मैंने सहज आकांक्षा से प्रेरित होकर लिखा है। मुझे कभी कोई सम्मान न प्राप्त हो तब भी लिखूँगा। लिखने के लिए पढ़ना और सोचना पड़ता है। यह सोचना मेरी जीवनचर्या का अंग है। लिख इसलिए रहा हूँ कि बिना लिखे रह नहीं सकता''। आचार्य तिवारी को शिक्षक होने पर गर्व है। आज उच्च शिक्षा में जो अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है, उसके पीछे विद्यार्थी और शिक्षक के बीच बढ़ती संवादहीनता तो है ही, शिक्षकों का ज्ञान रिक्त होते जाना भी है। छात्रों-शोध छात्रों से अब भी घनिष्ठ रचनात्मक सम्बन्ध बनाये रखने वाले आचार्य रामचन्द्र तिवारी कहते हैं, ''रोज नई बात आती है। हमारे अध्यापन में उसका समावेश होना चाहिए। ताकि हमारा विद्यार्थी अपने को किसी अन्य विश्वविद्यालय के विद्यार्थी से कमतर न समझे। छात्रों को ऊपर उठाने के क्रम में मैं ऊपर उठता गया।''

आचार्य रामचन्द्र तिवारी हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखना चाहते थे। अब भी चाहते हैं, लेकिन विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हैं, ''काव्य-विकास के स्तर पर उतना डूब नहीं पाता जितना एक इतिहास-लेखक के लिए अपेक्षित है।'' आचार्य तिवारी की यह ईमानदार स्वीकृति हमें भीतर तक झकझोर देती है कि वे कबीर, तुलसी, जायसी में से किसी एक को भी पूरी तरह नहीं समझ सके हैं। दुनिया जानती है कि आचार्य तिवारी इन कवियों के प्रामाणिक अध्येता हैं। वो जोड़ते हैं, ''कविता में स्वयं बहुत तहें और परतें होती हैं। पहली बार पढ़ने में जो लगता है वही अन्तिम नहीं होता। यदि ऐसा होता तो मुक्तिबोध की 'अँधेरे में' कविता की तरह व्याख्याएँ नहीं होतीं।'' आजकल आत्मकथा लिखने का फैशन चल पड़ा है। आत्मकथा की सबसे बड़ी और कड़ी शर्त है 'तटस्थता', जिसका निर्वाह कर पाना सबके बूते की बात नहीं है, लेकिन प्रतिमानों की परवाह ही कोई क्यों करे। इस सन्दर्भ में सवाल करने पर आचार्य रामचन्द्र तिवारी कहते हैं, ''आत्मकथा को शास्त्र में आत्मावदान कथन कहा गया है। अपने प्रेम-प्रसंगों की चर्चा करने वाले ही बता सकते हैं कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं। हो सकता है कि ऐसा करके वे दूसरों की दृष्टि में अपने व्यक्तित्व को महिमामय बनाना चाहते हैं। बेहतर तो यह होता कि दूसरे उनके प्रेम-प्रसंगों को अनुकरणीय मानकर उसका उल्लेख करते। वैसे मैं समझता हूँ कि यह उफान है कुछ दिनों में स्वत: शान्त हो जाएगा।'' संत तिरुवल्लुवर ने कहा है कि ''**वही लोग जीते हैं, जो निष्कलंक जीवन व्यतीत करते हैं और जिनका जीवन कीर्तिविहीन है, वास्तव में वे मुर्दे हैं।**'' आचार्य रामचन्द्र तिवारी का जीवन निष्कलंक भी है और सुकीर्ति-सम्पन्न भी। आचार्य तिवारी अपनी शर्तों के साथ सुदीर्घजीवी हों, हमारी यही कामना है।

—कमलेशकुमार गुप्त

'*राष्ट्रीय सहारा*' से साभार

डॉ० रामचन्द्र तिवारी की
नवीनतम कृति

**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और
उनके समकालीन आलोचक**

60.00

प्रतिभा मेरे लिए पसीना है : नामवर सिंह

—श्रीप्रकाश शुक्ल

नामवरजी अस्सी के हो रहे हैं (28 जुलाई 2006)। यूँ अस्सी का होना कोई बात नहीं है। बहुत लोग अस्सी के होते हैं। सवाल अस्सी के पहले होने का है और पार भी। यह होना ही किसी का अपनी संज्ञा को अतिक्रमित करना है। यहीं से क्रियाओं का पता चलता है। यूँ जीवन यदि क्रियाओं का है, तो नामवरजी इन क्रियाओं के हैं। नामवरजी की यही क्रियाएँ उन्हें भाषा के भीतर आत्मविश्वास देती हैं और समाज के भीतर स्वाभिमान। आलोचना से लेकर जन बुद्धिजीविता तक की उनकी यात्रा वास्तव में जीवन की इन्हीं क्रियाओं की अंतर्यात्रा रही है।

इस रूप में नामवरजी हिन्दी आलोचना के अकूत वैभव हैं। वे हिन्दी के स्वयंभू हैं। वे जितने साहसी हैं उतने ही आत्मविश्वासी। जितने समकालीन हैं उतने ही परम्परा में धँसे हुए। उन्होंने परम्परा अर्जित की है, न कि पाई है। इसीलिए समकालीनता की पथरीली जमीन को लगातार जातने और उसको पाटा देने का जोखिम उठाते रहते हैं। वे रचना के मूल्यांकन में 'सम्प्रेषण' को महत्त्व देते हैं लेकिन यह सम्प्रेषण 'सपाट' न होकर मूल्य निर्णय देने वाला होना चाहिए। अर्थात् रचना सम्प्रेषित ही न हो, बेचैन करने वाली भी होनी चाहिए।

इस दृष्टि से नामवरजी को समझने के लिए हमारे सामने उनकी तीन पुस्तकें हैं जो 28 जुलाई 2006 को एक साथ प्रकाशित हुई हैं। इनमें नामवरजी का एक अलग रंग है, पिछले सभी रंगों के बावजूद! '**बात बात में बात**' (वाणी प्रकाशन) उनके पिछले 12 वर्षों में प्रकाशित साक्षात्कारों का संकलन है। दूसरी पुस्तक है—'**घर का जोगी जोगड़ा**' (राजकमल प्रकाशन) जो उनके छोटे भाई काशीनाथ सिंह के संस्मरणों की पुस्तक है जो नामवरजी के आत्मीय क्षणों की अंतरंग प्रस्तुति है। तीसरी पुस्तक है—'**काशी के नाम**' (राजकमल प्रकाशन) जो 1955 से 1997 के बीच काशी के नाम नामवरजी के पत्रों का संग्रह है जो नामवरजी के 'व्यक्ति पक्ष' के अनेक पहलुओं को खोलती है। यहाँ पर तीनों पुस्तकों का संक्षिप्त परिचय है, यह कोई समीक्षा नहीं है।

1. '**बात बात में बात**'—जैसा कि हम कह आये हैं, यह बीते बारह वर्षों के संवाद का संचयन है जिसमें कुल 14 संवाद संकलित हैं। इसमें नामवरजी के वाचिक विमर्श से लेकर उनके साहित्यिक संघर्ष तक की स्थितियाँ मौजूद हैं। इन संवादों से गुजरते हुए कोई भी नामवरजी के निर्माण के मूल तत्त्वों को समझ सकता है। जैसे यही कि उनके निर्माण में सत्संग व श्रम की बड़ी भूमिका हैं। उनकी जो भी प्रतिभा है, वह श्रम से अर्जित की गई प्रतिभा है, न कि जन्मजात। उनके निर्माण में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और आचार्य शुक्ल की बड़ी भूमिका है। उन्हीं के अनुसार आचार्य द्विवेदी को तो लगभग पचा-से गये हैं। बचपन से ही पुस्तक का गद्यभाव उन्हें भाता रहा है। इनसे ही उन्होंने अपना संवाद बनाया और अपने अकेलेपर व एकांत का साथी भी और इन सबके साथ 'एक किसानी मन' है उनके पास जो हर चीज को पढ़ने के बाद पटेला देने को प्रेरित करता है।

इसके साथ ही यह 'संवाद संचयन' उनके गहन अध्ययन, सूक्ष्म दृष्टि और उत्कृष्ट नीर-क्षीर विवेक का भी परिचायक है। तुलसी का संग्रह 'त्याग न बिनु पहिचाने' तो जैसे उनका तकिया कलाम है। लगभग रुद्रट के 'गृहीत मुक्ता' और आननदवर्धन के 'काले च ग्रहण त्यागौ' की परम्परा में। इस सन्दर्भ में उन्होंने प्राचीन काव्यशास्त्र के रास्ते चलकर स्वदेशी काव्य सिद्धान्त की महत्त्वपूर्ण बात भी की है। कहा है—''असल में होता यह है कि आदमी के लिए अपने आप तक पहुँचने का रास्ता इतना छोटा नहीं होता जितना दिखाई देता है'' (पृ० 145) और यह पुनरुत्थानवाद नहीं है, बल्कि अपने लिए परम्परा को अर्जित करना है। कह सकते हैं कि 'समकालीनता' तक दूर के रास्ते, परम्परा से होकर ही पहुँचा जा सकता है।

इस पुस्तक में नामवरजी ने कुछ विवादित आरोपित बातों की सफाई भी दी है जो बड़ी महत्त्वपूर्ण है। जैसे यही कि 'अवसर के अनुरूप बात करना अवसरवाद नहीं है' (पृ० 39)। ''मार्क्सवाद मेरे लिए वह जमीन है जिस पर मैं पाँव टिकाकर ही आसमान पर ऊँचे से ऊँचे शिखरों को छू सकता हूँ'' (पृ० 112)। 'प्रतिमान का मतलब मीटर नहीं होता (पृ० 126)'। 'दूसरी परम्परा का मतलब सेकेण्ड से नहीं, अन्य परम्परा से है।' इस तरह के अनेक अंश इस पुस्तक में बिखरे पड़े हैं जो उनके 'नीर क्षीर विवेक' के परिचायक हैं। वे साफ कहते हैं—''हिन्दी के आलोचकों पर बात बात में बात दूसरे ढंग की होनी चाहिए, शास्त्रीय ढंग की नहीं होनी चाहिए।'' (पृ० 186)

2. '**घर का जोगी जोगड़ा**'—यह नामवरजी के ऊपर काशीनाथ सिंह के संस्मरणों की पुस्तक है जिसमें तीन संस्मरण संकलित हैं। इनमें 'घर का जोगी जोगड़ा' नामक संस्मरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह पुस्तक में पहली बार प्रकाशित है। यहाँ काशीनाथजी ने नामवरजी के व्यक्तित्व के कई महत्त्वपूर्ण पक्षों की ओर इशारा किया है। भूमिका में ही 'हँसमुख गद्य' की बात उठाकर काशीनाथजी ने नामवरजी के 'गद्य' की तरफ इशारा कर दिया है। 'घर का जोगी जोगड़ा' शुरू ही होता है—'भौजी नहीं रहीं...वे 4 जून 2003 को इस संसार से चुपचाप चली गईं'। इसी के भीतर से धीरे-धीरे नामवरजी का चेहरा, भाई नामवर का चेहरा और आलोचक नामवर का चेहरा उभरता है। यहीं पर 'लोलार्क कुण्ड' का वह मकान भी आता है जो काशीनाथजी के शब्दों में—'नामवर के अध्यापक, समीक्षक और साहित्यिक कार्यकर्ता का लेबर रूम था'। इसी में नामवरजी के 'पारिवारिक दर्द' हैं तो 'साहित्यिक विवेक' भी। यहीं पर ज्ञानरंजन, प्रयाग शुक्ल व चौथीराम यादव पर सटीक साहित्यिक टिप्पणियाँ हैं। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण टिप्पणी खुद काशीनाथजी की है जो नामवरजी के रचनात्मक व्यक्तित्व को खोलकर रख देती हैं—''नामवर न डूबते थे, न उड़ते थे—उन्होंने पानी को चीरते हुए तैरने का एक ऐसा रास्ता निकाला जिसमें सिर आकाश में रहे और धड़ पानी में।'' (पृ० 84) इसी पुस्तक में 'नामवर से काशी' की बातचीत भी दर्ज है जिसमें एक प्रश्न के उत्तर में नामवरजी ने कहा है—'घर तो अब भी सपना है'।

3. '**काशी के नाम**'—यह नामवरजी के पत्रों का संग्रह है जो उनके छोटे भाई काशीनाथ सिंह के नाम 1955 से 1997 के बीच लिखे गये हैं। ये पत्र एक बड़े भाई द्वारा अपने छोटे भाई को लिखे गये हैं जहाँ घर है, परिवार है, भावनाएँ हैं, चिन्ताएँ हैं और सब कुछ के बावजूद भाई काशीनाथ के प्रति एक सतत सतर्कता भी है। यहाँ संकलित पत्रों से नामवरजी के काशी विछोह से लेकर दिल्ली यात्रा तक की झलक आसानी से मिल सकती है। साथ ही यह भी कि नामवरजी काशी से जितना ही दूर होते गये हैं, उतना ही नयी-नयी काशी उनके मन में विकसित होती गई है। इसमें कुल 276 पत्र संकलित हैं जिसमें नामवरजी अपनी सामान्य मानवीय कमजोरियों के साथ उपस्थित हैं। ये कमजोरियाँ ही उनके व्यक्तित्व को बड़ा बनाती हैं और ईमानदार भी। शुरुआती दिनों के पत्र काशीनाथजी के 'सेटलमेंट' से लेकर बेचैन करने वाले पत्र हैं, तो बाद के पत्रों में काशीनाथजी को सिखावनभरी हिदायतें हैं। कहीं-कहीं रचनात्मक सुझाव हैं, तो कहीं अकूत प्रशंसाभाव भी। संस्मरणों में ज्यादातर प्रशंसाभाव ही प्रकट हुआ है। सभी पत्रों को तो पढ़ने पर ही मजा आयेगा किन्तु 26.12.1991 को लिखा गया पत्र यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ जो उन्होंने काशीनाथजी के विभागाध्यक्ष बनने पर लिखा है—''कुर्सी में खटमल बहुत होंगे, लेकिन उन्हें मारने में समय

नष्ट मत करना। कमरे में भनभनाने वाले मच्छर भी कम न होंगे, पर उनके संगीत से अपना मनोरंजन करना'' (पृ० 330)। जानकार बताते हैं कि काशीनाथजी ने इस कुर्सी पर बैठकर 'मनोरंजन' ही किया है। 'कुसमय' और 'कुजगह' की सारी भनभनाहटों के बावजूद!

कुल मिलाकर ये तीनों ही पुस्तकें, जिनका यहाँ स्थानाभाव के कारण सिर्फ बहुवस्तु स्पर्शी प्रतिभा को खोलने में सहायक हैं। 'पत्र' उनके व्यक्ति पक्ष को, 'संस्मरण' उनके 'मनुष्य' पक्ष को तथा 'साक्षात्कार' उनके 'आलोचक' पक्ष को समझने के आधार स्तम्भ हैं।

स्मृति-शेष

दिनेशनंदिनी डालमिया

हिन्दी की प्रमुख महिला साहित्यकार पद्मभूषण तथा 'हिन्दीरत्न सम्मान' से सम्मानित सत्तर वर्षीय श्रीमती दिनेशनंदिनी डालमिया का निधन हो गया। दिनेशनंदिनीजी ने उपन्यास, कहानी, गद्यगीत विभिन्न विधाओं में लगभग साठ पुस्तकें लिखीं। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—**उपन्यास** : मुझे माफ करना (1974 ई०), आहों की वैसाखियाँ (1978 ई०), कन्दील का धुआँ (1980), फूल का दर्द (1986 ई०), आँखमिचौली (1991 ई०), यह भी झूठ है (1993 ई०), मरजीवा (1996 ई०)। इन उपन्यासों में विषम पारिवारिक परिस्थितियों में दर्द के ताप से पिघलती एक नारी की व्यथा के चित्र हैं।

गद्यगीत : शबनम (1937 ई०), मौत्तिक माल (1938 ई०), शारदीया (1939 ई०), दुपहरिया के फूल (1942 ई०), वंशीरव (1945 ई०), उन्मन (1945 ई०), स्पन्दन (1949 ई०)। भावोच्छ्वास की गहनता, अन्तर्मुखता इन गद्यगीतों की विशेषता है। दिनेशनंदिनीजी के निधन से स्त्री-लेखन का एक युग समाप्त हो गया।

उपन्यासकार डॉ० सन्हैयालाल ओझा नहीं रहे

प्रख्यात उपन्यासकार डॉ० सन्हैयालाल ओझा का एक लम्बी बीमारी के बाद सोमवार, 29 अगस्त को अपराह्न 2.50 बजे कोलकाता के एक अस्पताल में निधन हो गया। आप 88 वर्ष के थे। डॉ० ओझा का भरा-पूरा परिवार है। समृद्ध साहित्य में—पन्द्रह उपन्यास, एक काव्य, एक नाटक, दो जीवनी, शताधिक समीक्षाएँ एवं निबन्ध हैं।

हिन्दी का गद्य साहित्य
डॉ० रामचन्द्र तिवारी
षष्ठम अद्यतन परिवर्धित संस्करण : 2007
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 625.00 (सजिल्द), 440.00 (अजिल्द)

कथन

''उपनिषदों में एक ईश्वर की बात कही गई है और यही यूनानी दर्शन भी है। तो मुझे लगा, भारतीय और यूरोपीय दर्शन का अध्ययन ऋग्वेद के बिना सम्भव नहीं है। तब ऋग्वेद पर मैंने बाकायदा काम करना शुरू किया। इधर की मेरी पाँच-छह पुस्तकों में ऋग्वेद पर एक अध्याय जरूर रहता है। उसका इतिहास-पक्ष पश्चिम एशिया और ऋग्वेद पुस्तक में है, काव्य-पक्ष भारतीय साहित्य की भूमिका में है। इसी तरह भारतीय सौन्दर्यबोध और तुलसीदास में ऋग्वेद से शुरू करके मैं तुलसीदास तक पहुँचा हूँ। तो मेरा वर्तमान चरण दर्शन संस्कृति और इतिहास का है और इससे मैं अभी तक निकल नहीं पाया।'' **—डॉ० रामविलास शर्मा**

इधर साहित्य में निर्मित दलबंदी और प्रविष्टित अपसंस्कृति ने सच्ची रचनाधर्मिता एवं प्रतिभावान रचनाकारों को बुरी तरह से प्रभावित किया है। पुरस्कारों की राजनीति और राजनीति के पुरस्कारों ने सामंती प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है। वर्षों पहले निराला ने सिंहगर्जना में कहा था, ''दलबंदी का भाव प्रतिभा के प्रतिकूल है और यह स्वार्थ का द्योतक है। इसके रहते उच्च साहित्य का निर्माण असम्भव है और कोई सूक्ष्म चिंतन नहीं कर सकता'' स्मरण करना जरूरी है कि कालिदास, कबीर, सूर, तुलसी, उमर ख़ैय्याम, रवीन्द्रनाथ टैगोर, प्रेमचंद, प्रसाद, निराला आदि अपने-अपने साहित्य क्षेत्र के महोज्ज्वल रत्न थे, जो दलबंदी भाव और सामंतवादी सोच में कभी आए ही नहीं। वेदों की इतनी बड़ी महिमा केवल इसलिए है कि वे देश और काल के बन्धनों से बाहर हैं। अंग्रेजी भाषा को बर्नार्ड शॉ पर इसलिए गर्व है कि उन्होंने धर्म, समाज, राजनीति और दर्शन की प्रचलित प्रथाओं के पार जाकर लिखा। किसी समय समाज ने माइकेल, मधुसूदन, पी०बी० शेली, उमर ख़ैय्याम, ग़ालिब, प्रेमचंद आदि का मज़ाक उड़ाया था, लेकिन आज इनके साहित्य को देखकर लोग नतमस्तक हैं। **—डॉ० अमर सिंह वधान**
चण्डीगढ़

इतिहास के अज्ञात तथ्यों के ज्ञान के लिए नये शोध की आवश्यकता है ताकि अतीत के वास्तविक स्वरूप की पहचान की जा सके। देश में इतिहास-लेखन की परम्परा नहीं रही है। अभी तक पूर्व राजाओं के राजदरबार के भाटों और चारणों द्वारा ही इतिहास को तत्कालीन राजाओं की प्रशस्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया। यदि भारतीय इतिहास को सही परिदृश्य में प्रस्तुत किया जाय तो इससे लोगों को बड़ी प्रेरणा मिलेगी। इतिहासकारों और साहित्यकारों को इस दिशा में प्रयास करना चाहिए।

—भैरो सिंह शेखावत, *उपराष्ट्रपति*
आनन्द शर्मा के 'अमृतपुत्र' ऐतिहासिक उपन्यास के लोकार्पण के अवसर पर

साहित्य की घटती लोकप्रियता

साहित्य की लोकप्रियता आज आम लोगों में घटी है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि बच्चों व युवाओं को साहित्य अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर पा रहा है। गाँव में किसानों व गरीबों के बीच अब भी हिन्दी प्रचलित नहीं हो पाई है। वे हिन्दी को अब भी बाहरी भाषा मानते हैं। अपने यहाँ की बोलचाल की भाषा ही उन्हें प्रिय है। आमजनों तक हिन्दी को पहुँचाने के लिए अभी और प्रयास की जरूरत है।

वर्तमान साहित्य जगत में लेखकों की कमी नहीं है। साहित्य जगत आर्थिक रूप से समृद्ध तो जरूर हुआ है, लेकिन गम्भीर साहित्य की पहुँच कम हुई है। इससे भी हिन्दी साहित्य की स्थिति खराब हुई है। पहले बच्चों व युवाओं में साहित्य के प्रति ललक हुआ करती थी, लेकिन दुर्भाग्य से अब यह ललक टूट रही है। साहित्य के लिए खतरनाक स्थिति यह भी है कि यह गरीब व किसानों के बीच नहीं पहुँच पा रही है। किसान अपनी ही बोली भाषा में जीता मरता है। उसके लिए हिन्दी आज भी अंग्रेजी के समान है। वह इससे बिदकता है। उनका कहना है कि यह विडम्बना ही है कि पढ़े-लिखे लोग अपनी लोक बोली से कटते जा रहे हैं। उन्होंने भोजपुरी या अन्य लोक बोली को हँसी की बोली बनाकर छोड़ दिया है। वर्तमान साहित्य मध्यम वर्ग में पैदा होता है और उसी में दम तोड़ देता है। **—मैनेजर पांडेय**

भाषा का मानव समाज के साथ गहरा सम्बन्ध है। जिस प्रकार बिना समाज के भाषा का अस्तित्व सम्भव नहीं, उसी प्रकार बिना भाषा के समाज का अस्तित्व नहीं हो सकता है। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में सभी भाषाओं को बराबर स्थान दिया जाना चाहिए। यदि ऐसा नहीं हुआ तो आने वाले कुछ वर्षों में विश्व के न सिर्फ कुछ भाषाएँ लुप्त हो सकती है बल्कि उस भाषा को बोलने वाले समुदाय की संस्कृति भी समाप्त हो सकती है।

—प्रो० डी०पी० पटनायक
पूर्व निदेशक, केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर

पृष्ठ 1 का शेष

देश ने भौतिक संस्थानों के निर्माण और विकास पर अपनी सारी ऊर्जा लगा दी, किन्तु मनुष्य के निर्माण की बात नहीं सोची, जिनके द्वारा और जिनके लिए यह सब किया जाना था। परिणामस्वरूप देश के सार्वजनिक उद्योग समाप्त होते जा रहे हैं। इन उद्योगकर्मियों ने लेना जाना, देना नहीं। देने से तात्पर्य धन से नहीं संवेदनापूर्ण निष्ठा और कर्त्तव्य की भावना से है। देश की प्रतिभा का विदेश में पलायन हो रहा है। यह राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम की भी चिन्ता है। देश में ऐसा वातावरण बनाइए कि देश की प्रतिभा देश के निर्माण में सहभागी बने।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

आपका पत्र

‘भारतीय वाङ्मय’ का अगस्त–सितम्बर वाला अंक सामने है। इसे पढ़कर पहली प्रतिक्रिया मन पर उभरी कि मोदीजी शरीर से तो वयोवृद्ध हैं, परन्तु मन उनका बनारसी मौजमस्ती और भरपूर ज़िन्दादिली से परिपूर्ण है। इसके मूल स्वरूप उक्त गुण इस पत्रिका में उतर आते हैं और हर अंक में कुछ न कुछ नई पाठ्य सामग्री ऐसी आने लगी है जो पाठकों का भरपूर मनोरंजन करती है, मनोन्नयन भी। इस अंक में सामने ही पड़ी एक साहित्यिक गुदगुदी से भरी लम्बी कविता ‘वाह बनारस, आह बनारस’। कवि शिवकुमार पराग ने बनारस के भूगोल पर जो वर्तमान साहित्यकारों के पगचिह्नों और उनकी कृर्तत्व–लहरों टाँक दिया है, वह बार–बार पढ़ने का मन करता हे। अंक इस प्रकार की और हिन्दी साहित्य से जुड़ी सामग्री, अनुरंजन–विचारोत्तक टिप्पणियों और उच्चस्तरीय चयनित सूचनाओं से समृद्ध है। पुस्तक पठन–पाठन और पुस्तकालयों का पुनरुद्धारसम्बन्धी एक आन्दोलन जैसा जो हर अंक में खड़ा हो जाता है, उसका वृद्धक मूल्य है। पत्रिका की इस सुरुचिपूर्ण स्तरीयता और सजीवता, जो उत्तरोत्तर विकसित होती जाती दीख रही है, के लिए आपको हार्दिक साधुवाद।

—**डॉ० विवेकी राय,** गाजीपुर

अक्तूबर 2006 के ‘भारतीय वाङ्मय’ अंक में ‘प्रेमचंद की कविता’ पृ० 3 पर, प्रेमचंद के पत्र में इक़बाल का एक शेर छपा है क़तई गलत, अशुद्ध! प्रेमचंदजी ने कभी ऐसा न लिखा होगा। वह तो उर्दू वाले थे...अर्थ है जिस खेत से किसान को रोज़ी न मिले उस खेत के हर खोशा–ए–गन्दुम (गेहूँ के भुट्टे) को जला दो। सती शेर यों है—

‘‘जिस खेत से दहक़ां को मयस्सर न हो रोज़ी
उस खेत के हर खोशा–ए–गन्दुम को जला दो।’’

—**बानो सरताज,** चन्द्रपुर

‘भारतीय वाङ्मय’ के अक्टूबर 2006 अंक में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के दिल्ली केन्द्र द्वारा आयोजित विकास–संगोष्ठी का विस्तृत विवरण देकर आपने बहुत अच्छा किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए श्री रामशरण जोशी ने जो मुद्दा उठाया वह हमारे सांस्कृतिक जीवन की गम्भीर समस्या की ओर इशारा करता है। उन्होंने इस बात पर गहरी चिन्ता व्यक्त की है कि हमारे समाज में पुस्तक–संस्कृति अभी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाई है। वाचनालयों और पुस्तकालयों को खोलने पर जोर नहीं दिया जा रहा है जबकि मोहल्लों और सोसाइटियों में शापिंग काम्प्लेक्स खुल रहे हैं।

यानि हम व्यापारीकरण के शिकार तो बनते जा रहे हैं, पर उसका लाभ उठाने के लिए आवश्यक ज्ञान–विज्ञान बटोरने से कतरा रहे हैं। भूमण्डलीकरण के इस दौर में विकास उन्हीं समूहों का हो सकता है जो निरन्तर विकासमान ज्ञान–विज्ञान व प्रौद्योगिकी के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ने को तैयार रहता हो। पुस्तकालयों की स्थापना गाँव–गाँव में करके केरल ने जो आदर्श प्रस्तुत किया है उससे प्रेरणा लेकर इतर प्रान्तों को भी आगे आना है।

पुस्तक–संस्कृति के विकास में रोड़ा अटकाने वाला एक प्रमुख तत्त्व है हमारी घोर निरक्षरता। यदि हम अपनी जनसंख्या को चालीस प्रतिशत जनता को यानि 40 करोड़ लोगों को निरक्षरता के अन्धकार से मुक्त करने की कोशिश नहीं करेंगे तो यहाँ पुस्तक–संस्कृति कैसे पनपेगी?

—**के०जी बालकृष्ण पिल्लै**
तिरुअनन्तपुरम

‘भारतीय वाङ्मय’ का विगत कई वर्षों से नियमित पाठक हूँ। आकार में छोटा होने पर भी इस पत्र से वाङ्मय जगत की जितनी जानकारियाँ मिलती हैं, वे एक साथ कहाँ मिल पाती हैं? अक्टूबर के अंक में सम्पादकीय में आपकी यह टिप्पणी कितनी सटीक है कि उच्च पाठ्यक्रम में हिन्दी के आदिकाल, भक्तिकाल तथा रीतिकाल की नितान्त उपेक्षा हो रही है और महत्त्वहीन नवीन रचनाकारों को उसमें स्थान मिल रहा है। आज का एम०ए० का विद्यार्थी और अध्यापक भी क्या पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता या उसके अर्वाचीन होने या न होने की जानकारी रखते हैं? विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों तक को क्या विनयपत्रिका की वियोगी हरि की टीका, रामचन्द्रिका की लाला भगवानदीनकृत व्याख्या या जगन्नाथदास ‘रत्नाकर’ के कालजयी ग्रन्थ बिहारी रत्नाकर का तलस्पर्शी ज्ञान है? क्या ये प्राध्यापक देव, बिहारी, घनानन्द और पद्माकर का अध्यापन उतनी ही प्रामाणिकता से करा सकते हैं, जितना पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, डॉ० जगन्नाथ तिवारी या डॉ० नगेन्द्र कराते थे?

पुरानों की बात रहने दें, आज के स्नातकोत्तर छात्र भारतेन्दु या परवर्ती द्विवेदी–युग के कवियों—रामचरित उपाध्याय, ठाकुर गोपालशरण सिंह, गयाप्रसाद शुक्ल सनेही के काव्यसौष्ठव की कितनी जानकारी रखते हैं? प्राचीनों की यह उपेक्षा उचित नहीं।

इसी अंक में आपने स्मृतिशेष डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह के शोधग्रन्थ ‘आधुनिक हिन्दी के विकास में खड्गविलास प्रेस की भूमिका’ की चर्चा की है। कितने लोग उक्त प्रेस तथा उसके स्वामी महाराजकुमार बाबू रामदीन सिंह के बारे में जानते हैं? वे भारतेन्दु की मित्रमण्डली में थे और उनके ही आग्रह से खड्गविलास प्रेस से दयानन्द सरस्वती की पुस्तक ‘प्रतिमा पूजन विचार’ छपी थी। साम्प्रदायिक सौहार्द का कैसा अप्रतिम उदाहरण था कि परम वैष्णव भारतेन्दु स्वामी दयानन्द की उस कृति को छपवाते हैं जो प्रतीकोपासना का खण्डन करती है। और तो और, जब काशी के विद्वान पण्डितों से शास्त्रार्थ करने के लिए स्वामी दयानन्द काशी आए थे तब उनके स्वागत के लिए केवल भारतेन्दुजी ही स्टेशन पर मौजूद थे।

निश्चय ही हिन्दी साहित्य के विकास में प्रकाशकों की भूमिका शोध का विषय है। कितना अच्छा हो कोई शोधार्थी इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद, हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कोलकाता, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, बम्बई, साहित्य सदन, चिरगाँव (झाँसी) और गंगा पुस्तक माला, लखनऊ के साहित्य प्रकाशन का जायजा ले तथा हिन्दी साहित्य के चतुर्मुखी विकास में इनके अवदान को सुनिश्चित करे। प्रकाशन कार्य में लगे खुद साहित्यकारों के निजी प्रयासों का मूल्यांकन भी होना चाहिए। सर्वश्री प्रेमचंद, मैथिलीशरण, यशपाल, दिनकर, जैनेन्द्र, उपेन्द्रनाथ अश्क, वृन्दावनलाल वर्मा लेखन के साथ–साथ प्रकाशन में लगे रहे। इस दृष्टि से सरस्वती प्रेस, बनारस, साहित्य सदन, चिरगाँव, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, उदयाचल, पटना, पूर्वोदय, दिल्ली, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद और मयूर प्रकाशन, झाँसी के कार्यों की मीमांसा अपेक्षित है।

—**(डॉ०) भवानीलाल भारतीय**
जोधपुर

आमतौर पर प्रकाशन–संस्थानों की पत्रिकाओं में प्रकाशकों का अपना प्रचार अधिक होता है और अन्य विषय गौण होते हैं। ‘भारतीय वाङ्मय’ की नीति उससे विपरीत है। पुस्तक, लेखक और प्रकाशन–जगत की खोजपूर्ण जानकारी इसमें मुख्य है। मुक्त विचारों और खोजपूर्ण जानकारी के कारण अलग कलेवर की यह पत्रिका बड़े कलेवर की पत्रिकाओं से भारी है। यही नीति बनी रहे, यही कामना है।

—**दयानन्द वर्मा,** नई दिल्ली

‘भारतीय वाङ्मय’ छोटी नाव की तरह है, जो नदी पार करने में जहाज से ज्यादा कारगर होती है। ताजे अंक में ‘काबुल का किताबवाला’ पढ़कर रोंगटे खड़े हो गये। इसी प्रकार प्रेमचंदजी पर राजेन्द्र बाबू का भाषण दुर्लभ और मननीय है।

पिछले अंक में आपने मेरे मित्र डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह के निधन का समाचार देकर मुझे रुला दिया। ‘आज’ दैनिक के समाचार–सम्पादन विभाग में रत्नशंकरजी, धीरेन्द्रजी, यशवंतजी और मेरी चौकड़ी थी। चारो शाम को गोला दीनानाथ में, बीच बाजार में खोमचा लगाकर चाट बेचनेवाले एक दाढ़ीवाले के यहाँ रोज जुटते थे। धीरेन्द्रजी हमलोगों में सबसे ज्यादा विद्वान थे। उनका असमय जाना साहित्य की बहुत बड़ी क्षति है।

—**डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र**
देहरादून

यत्र-तत्र-सर्वत्र

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जन्मशताब्दी समारोह

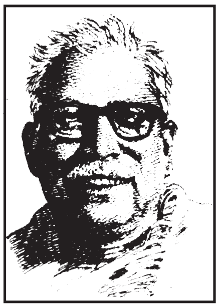

हिन्दी अकादमी, दिल्ली ने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर चार दिवसीय कार्यक्रम दो चरणों में आयोजित किया। प्रथम चरण के अन्तर्गत चार संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। पहली संगोष्ठी में 'आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की सांस्कृतिक दृष्टि' तथा दूसरी संगोष्ठी में 'निबन्धकार : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी' पर विचार-विमर्श किया गया।

'विमर्श' के तत्त्वावधान में '**विश्व संवाद केन्द्र', काशी** के सभाकक्ष में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जन्मशती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित 'आचार्य द्विवेदी का भाषा चिन्तन' विषयक संगोष्ठी में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अवकाशप्राप्त आचार्य प्रो० लालचन्द गुप्त 'मंगल' ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में स्पष्ट किया कि आचार्य द्विवेदी की भाषा क्षेत्रीय रंग-रूप और खाद पानी से समृद्ध है। वह समाज और संस्कृति की संवाहक है, जो उनकी जन-चेतना का प्रमाण है। वे लोक जीवन से शब्दों को उठाकर उसी रूप में नए और गौरवपूर्ण अर्थ में प्रयुक्त करते हैं। आज व्यवहृत होने वाले अनेक शब्दों के ऐतिहासिक रूप की खोज कर उसका संस्कार करते हैं। इस प्रकार वे सैकड़ों शब्दों को टकसाली रूप दे जाते हैं।

विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो० राजमणि शर्मा ने स्पष्ट किया कि कबीर नहीं स्वयं आचार्य द्विवेदी वाणी के डिटेक्टर थे। आचार्य द्विवेदी के मत को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी शोषण और परपीड़न के द्वारा प्राप्त हुई शक्ति की आवाज है। संगोष्ठी का संचालन प्रो० रामकली सर्राफ ने किया।

हिन्दी माह समापन समारोह

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून में आयोजित हिन्दी माह समापन समारोह में मुख्य अतिथि **प्रो० सूरज पालीवाल** ने वैश्वीकरण एवं भू-मण्डलीकरण के इस युग में भाषा और संस्कृति पर चारों ओर से हो रहे हमले की चर्चा करते हुए इस स्थिति पर अपनी गहरी चिन्ता व्यक्त की और बताया कि किस प्रकार हम भारतीय अपने संकल्प, साहस, आत्मविश्वास और विवेक की कमी के कारण विदेश, विशेषत: अमेरिका को अपने आदर्श के तौर पर देख रहे हैं। हमारे देश की गरीब जनता से प्राप्त करों से उच्च तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्त प्रतिभा का पलायन अमेरिका आदि देशों की ओर हो रहा है। यह हमारे देश की बहुत बड़ी हानि है। वैज्ञानिक संगठनों में किए जा रहे अनुसन्धान का लक्ष्य, भारत की 80 प्रतिशत ग्रामीण जनता तक पहुँचना है। यह हिन्दी के माध्यम से ही हो सकता है। संस्कृति पर हो रहे इस आक्रमण के दौर में सभ्यताओं का संघर्ष संस्कृतियों का संघर्ष भी है। अपनी भाषा को बचाकर ही संस्कृति और सभ्यता को बचाए रखा जा सकता है।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए संस्थान के कार्यकारी निदेशक **डॉ० एम०पी० सक्सेना** ने कहा—वैज्ञानिक शोधपत्रों व उपलब्धियों को राजभाषा हिन्दी में प्रचारित-प्रसारित करना चाहिए।

समारोह संचालक **डॉ० दिनेश चमोला** ने कहा कि ज्ञान चाहे हम अन्य भाषाओं से भी लें, लेकिन अभिव्यक्ति हम अपनी ही भाषाओं में करें। हिन्दी अपनत्व, संस्कार व उदारता की भाषा है। हमारे ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धियों पर हमारा देशवासी तभी गर्व की अनुभूति कर सकता है जब वह हिन्दी व भारतीय भाषाओं में अभिव्यक्त हो।

हिन्दी का अर्थशास्त्र

आज हिन्दी का भूमण्डलीकरण और वैश्वीकरण के युग में हिन्दी विश्व में अर्थशास्त्र की भाषा बन गई है। चीन तथा भारत के बढ़ते व्यापार ने चीन को हिन्दी के माध्यम से भारत के उपभोक्ता बाजार में प्रवेश के लिए प्रेरित किया है। चीन के विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्येताओं की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। इसके लिए भारत से हिन्दी अध्यापक आमंत्रित किये जाते हैं जो चीनवासियों को हिन्दी में प्रशिक्षित कर रहे हैं। उनके लिए पाठ्य-पुस्तकें भी तैयार की जा रही हैं। इस प्रकार वैश्वीकरण के युग में हिन्दी अर्थशास्त्र का माध्यम बन गई है।

लोकप्रिय लेखक राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

राष्ट्रपति कलाम की हिन्दी में प्रकाशित विभिन्न पुस्तकों की दो लाख प्रतियाँ अब तक बिक चुकी हैं। उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं—अग्नि की उड़ान, तेजस्वी मन, मेरे सपनों का भारत, हम होंगे कामयाब, हमारे पथ प्रदर्शक, क्या हैं कलाम, गाइडिंग सोल (अंग्रेजी)। इन पुस्तकों के प्रकाशक हैं प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

भारतीय भाषा सर्वेक्षण

80 वर्ष बाद अप्रैल 2007 से भारतीय भाषाओं तथा बोलियों का सर्वेक्षण होने जा रहा है जो विशाल रूप में विश्व में पहली बार होगा। यह भाषाओं की विभिन्नता में एकता के नये आयाम स्थापित करेगा। यह सर्वेक्षण केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के निदेशक सुप्रसिद्ध भाषाविद् प्रो० उदयनारायण सिंह के निर्देशन में सम्पन्न होगा।

10,000 भाषाओं के इस सर्वेक्षण में 10,000 भाषाविद् भाग लेंगे। इस सर्वेक्षण में दस वर्ष लगेंगे और इसमें 280 करोड़ रुपये व्यय होंगे।

प्रथम भाषा सर्वेक्षण जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 1898 ई० में शुरू कराया था जो 1927 ई० में पूर्ण हुआ था।

हिन्दी साहित्य में बहुत इंज्वायमेंट है

''हिन्दी साहित्य में बहुत रस और इंज्वायमेंट है। हिन्दी की समझ अभी कम है लेकिन जो भी गुरुजी बताते हैं, उससे लगता है कि हिन्दी साहित्य बहुत समृद्ध है। उपन्यास, कहानी वेरी नाईस। जैसे हिन्दी पढ़ने में मजा आया उसी तरह इस शहर बनारस में भी बहुत अच्छा लगा। यहाँ का सूर्योदय, घाट और भाजन वॉव।''

ऐसे ही विचार इटली के तूरिन विश्वविद्यालय के हिन्दी साहित्य से जुडे स्नातक छात्रों ने बीएचयू के यूनिवर्सिटी गेस्ट हाउस में आयोजित समारोह में व्यक्त किये। एक माह से इटली के छह छात्र हिन्दी साहित्य से परिचित हुए। हिन्दी प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर विदेशी छात्रों ने हिन्दी और बनारस से जुड़े अपने अनुभवों को व्यक्त किया।

सभी विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य संरचना में मिठास का एहसास हुआ। इसे उन्होंने शब्दों में भी बयान भी किया। बनारस के घाट, सूर्योदय, मन्दिर आदि के साथ-साथ बनारसी स्वादिष्ट व्यंजन अत्यन्त भाया। शिविर में शामिल अलेक्सान्द्रो भारत में रहकर नाभादास की कृति भक्तमाल का इटली अनुवाद कर रहा है। क्लाउडिया जिसे प्यार से लोग बदली भी कहते हैं ने हिन्दी ज्ञान के साथ-साथ पिछले एक माह तक भारतीय शास्त्रीय संगीत गायन का हुनर भी सीखा तो वीटो को हिन्दी पढ़ने में ही खूब मजा आया। इजाडोर ने हिन्दी प्रशिक्षण के साथ-साथ कथक नृत्य भी जाना और प्रमाणपत्र वितरण समारोह में कथक के कुछ एक चरण को मंच पर उतारा भी। जूलिया हिन्दी साहित्य में महीने भर खूब डूबी तो पावलो ने हिन्दी अध्ययन के साथ-साथ बाँसुरी वादन का आनन्द भी लिया। समारोह के मुख्य अतिथि राँची विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० रविभूषण एवं हैदराबाद के केन्द्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० विजेन्द्रनारायण सिंह ने इटली के छात्रों को प्रमाणपत्र प्रदान किया। अतिथियों का स्वागत प्रो० अवधेश प्रधान ने तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो० बलराज पाण्डेय ने किया। संचालन एवं शिविर के बाबत विचार डॉ० सदानन्द शाही ने व्यक्त किया।

भाषाओं का राजनीतिकरण

केन्द्र सरकार ने अक्टूबर 2004 में तमिल को 'समृद्ध भाषा' (क्लासिकल लेंग्वेज) का दर्जा दिया। सरकार के इस फैसले से दक्षिण के तीन

अन्य राज्यों में अपनी-अपनी भाषा को यही हैसियत दिलाने को लेकर होड़ लग गई है। इस सन्दर्भ में केन्द्र सरकार की सबसे बड़ी उलझन यही है कि अन्य राज्यों की इस माँग में बराबर का दम है। प्राचीनता और समृद्धि के लिहाज से कन्नड़ और तेलुगु तमिल से ज्यादा पीछे नहीं हैं। मलयालम की माँग लेखकीय प्रयोगों जैसे अन्य आधारों की वजह से वजनदार जान पड़ती है।

इस मामले में दो वर्ष से आन्ध्र, कर्नाटक और केरल में राजनीतिक उथल-पुथल मची हुई है। अपने-अपने पक्ष को पुख्ता करने के लिए सम्बद्ध राज्य पिछले दो बरसों में तमाम संसाधन और ऊर्जा का इस्तेमाल कर चुके हैं।

'समृद्धि' हासिल करने के लिए तीनों राज्यों में अभियानों की भरमार रही। विधानसभाओं में एकमत से इसके पक्ष में प्रस्ताव पारित हुए और दावेदारी के पुख्ता सबूतों के साथ अपनी माँग प्रधानमंत्री तक पहुँचाई गई। स्वर्ण जयन्ती समारोहों के तहत हैदराबाद में 'स्वर्णोत्सवम' और बंगलौर में 'स्वर्ण कर्नाटक' जैसे आयोजन इस माँग को उठाने वाले प्रमुख मंच बने। इस माँग को लेकर आयोजित समारोह को केवल केरल ने ही कोई विशेष नाम नहीं दिया। भाषाओं को क्लासिकल का दर्जा न देने पर राज्यव्यापी आन्दोलनों और प्रदर्शनों की धमकी तक दी गई। यह धमकी बंगलौर से आई। इस मामले में आन्ध्र प्रदेश और भी आगे निकल गया। वहाँ के एक चर्चित गीतकार ने धमकी दी कि अगर आन्ध्र की इस माँग को नहीं माना गया तो वे अपना राष्ट्रीय पुरस्कार लौटा देंगे।

दक्षिण की चारों भारतीय भाषाओं में मलयालम की उम्र सबसे कम है। लेकिन सतत विकास और नवीं शताब्दी से लगातार बढ़त इसके दावे का एक मजबूत आधार बनता है। साहित्य की तमाम धाराओं में तेजी से बढ़त के अलावा केरल में पत्रकारिता इस गति से फली-फूली कि देश में कहीं और ऐसी मिसाल नहीं। दक्षिण के इस छोटे से राज्य से सबसे ज्यादा साहित्यिक और समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। जब से यूनेस्को ने यहाँ की स्थानीय कला कोडियट्टम को पुराकाल की पहचान बताया है तब से मलयालम की दावेदारी और वजनदार हुई है।

तमिल को 'समृद्ध भाषा' के रूप में प्रचारित-प्रसारित करने के लिए तमिलनाडु को 100 करोड़ रुपये मिले हैं। प्रगट है 'भाइयों' की नजर इस पर भी होगी।

किताबों की ऑनलाइन दुनिया

www.onlinebooks.library.upenn.edu

यदि आपको किताबों की दुनिया में खोए रहना पसन्द है और आप दुनिया की तमाम किताबों को ऑनलाइन पढ़ना चाहते हैं तो यह वेबसाइट काफी मदद करेगा। इसके जरिए करीब 25,000 किताबों को उलटने-पलटने का मौका मिलेगा। हर दिन अपडेट होने वाले इस वेबसाइट पर जहाँ किताबें ऑनलाइन मिलेंगी, वहीं समाचार, फीचर, आर्काइव्स व इंडेक्स के अलावा कई इनसाइड स्टोरी में उपलब्ध हैं। यहाँ नई किताबों के बारे में भी जानकारी मिल सकती है। सबसे पहले बुक्स ऑनलाइन इस साइट पर मिलेगा। इसके नीचे सर्च आवर लिस्टिंग, न्यू लिस्टिंग, ऑथर्स, टाइटल्स, सब्जेक्ट के अलावा सीरियल्स के आप्शंस मिलेंगे। नीचे न्यूज़ लिखा है, जिसके तहत न्यूज़, ऑनलाइन गुक्स, गूगल लाइब्रेरी न्यूज़ के अलावा नवीनतम किताबों की सूची मिलेगी। इन सभी ऑप्शंस पर क्लिक करने के बाद आपको कई नई बातों की बारीक जानकारी उपलब्ध होगी। फीचर ऑप्शंस पर क्लिक करने के बाद महिला लेखकों, प्रतिबन्धित किताबों सहित पुरस्कृत किताबों की जानकारी मिलेगी। दुनिया के प्रमुख महिला लेखकों के पुस्तकों के बारे में और ऑनलाइन किताब यहाँ उपलब्ध है। इस वेबसाइट पर सबसे अहम बात यह है कि आर्चीव्स और इंडेक्स पर क्लिक करने पर सामान्य जानकारी के अलावा विदेशी भाषा की किताबों और विशेष किताबों की जानकारी मिलेगी। इसके तहत अंग्रेजी के नामानुसार लेखकों की कृति पढ़ सकते हैं। नीचे जाने पर इन्साइड स्टोरी का आप्शंस मिलेगा। इसमें आपको इस वेबसाइट के बारे में तमाम जानकारी के अलावा किसी भी किताब की लिंक के बारे में भी जानकारी मिल जाएगी। **—विनीत उत्पल**

हिन्दी सर्वसम्पन्न सम्पर्क भाषा

J.S.S.COLLEGE FOR WOMEN

बाएँ से : प्रो० मल्लिकार्जुन सेट्टी,
प्राचार्य सोमण्णा, हिन्दी प्राध्यापिका
प्रो० प्रमीला, श्रीमती बी०टी० शशिकला देवी
तथा डॉ० वासंती

''विद्यालयों में हिन्दी भाषा के अध्यापन पर रोक हटा ली गई है। आज हिन्दी उत्तर तथा दक्षिण भारत के मध्य सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में परस्पर व्यापार-व्यवहार की सेतु बन गयी है। हिन्दी एक मधुर, सुन्दर, रसमय, कोमल, श्रीमंत तथा सम्पन्न सम्पर्क भाषा है। इसे जानना हर किसी का कर्त्तव्य है।'' मैसूर में हिन्दी संघ का उद्घाटन करते हुए **प्रो० मल्लिकार्जुन सेट्टी** ने कहा। विश्रांत हिन्दी प्राध्यापिका **प्रो० प्रमीलाजी** ने हिन्दी दिवस का आशय बताते हुए हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया। स्नातक पूर्व कॉलेज के प्राचार्य **प्रो० सोमण्णाजी** ने अध्यक्ष पद से कहा कि आज जो हिन्दी-संघ उद्घाटित हुआ है, वह हिन्दी के कार्यक्रमों का आयोजन करेगा और छात्राओं का मार्गदर्शन करेगा।

डॉ० श्रीप्रसाद के बालसाहित्य पर पी-एच०डी०

डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा से श्रीमती पुष्पा देवी ने डॉ० प्रेमीराम मिश्र, आचार्य, एम०ए०, पी-एच०डी०, अध्यक्ष : हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, एटा (उ०प्र०) के निर्देशन में डॉ० श्रीप्रसाद के समग्र बाल साहित्य पर अनुसन्धान कर पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की है। शोध उपाधि का विषय है 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी बाल साहित्य में डॉ० श्रीप्रसाद का योगदान'।

डॉ० श्रीप्रसाद विगत पचास वर्षों से भी अधिक समय से बाल साहित्य की सभी विधाओं (काव्य, कहानी, नाटक, उपन्यास) में सृजन करते आ रहे हैं। 'हिन्दी बाल साहित्य की रूपरेखा' और 'बाल साहित्य की अवधारणा' के अतिरिक्त सर्जनात्मक साहित्य की आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सन् 1995 में आपको सर्वोच्च बाल साहित्य सम्मान 'बाल साहित्य भारती' (उ०प्र० हिन्दी संस्थान) प्राप्त हुआ था। स्वीडिश भाषा के विश्वविद्यालय काव्य-संग्रह में आपने भारत का प्रतिनिधित्व किया है। सतहत्तर भाषाओं के इस बालकाव्य संग्रह में एक देश से एक कवि संकलित किया गया है। केन्द्र और प्रदेश से आपकी कई पुस्तकें भी पुरस्कृत हैं।

हिंगलिश शब्दकोश

एक ब्रिटिश शिक्षक ने अंग्रेजी और दक्षिण एशियाई भाषाओं, खासकर हिन्दी, के शब्दों का संग्रह तैयार किया है। इस हिंगलिश शब्दकोश में ऐसे शब्दों को शामिल किया गया है जो ब्रिटेन और एशिया में धड़ल्ले से बोले जाते हैं। इस शब्दकोश में आम बोलचाल की भाषा में इस्तेमाल होने वाले अंग्रेजी, हिन्दी व दूसरी भाषाओं के शब्दों को शामिल किया गया है। यद्यपि हिंगलिश शब्द हिन्दी और अंग्रेजी का ही मेल है, लेकिन इसमें दूसरी एशियाई भाषाओं के शब्द भी शामिल किए गए हैं। बीबीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार आए दिन बोलचाल की भाषा में अंग्रेजी और दक्षिण एशियाई भाषाओं के शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का एक साथ जमकर इस्तेमाल होने

लगा है। मध्य ब्रिटेन के डर्बी शहर में रहने वाले ब्रिटिश भारतीय शिक्षक बलजिंदर महल ने यह शब्दकोश तैयार किया है। इसे **दि क्वींस हिंगलिश डिक्शनरी** के रूप में प्रकाशित किया गया है। महल ने बीबीसी से बातचीत करते हुए कहा कि हिंगलिश भाषा ब्रिटिश और एशियाई समुदायों के बीच मेलजोल की उपज है। उन्होंने कहा कि हिंगलिश के कारण भाषाई दीवार खत्म हो गयी है और दोनों क्षेत्र की भाषाओं के मिलन से हिंगलिश का जन्म हुआ है। इस शब्दकोश में ग्लासी, टाइमपास, बदमाश, पण्डित, शैम्पू, पायजामा, वंदना, बंगला, कारवां जैसे शब्दों की भरमार है।

हिन्दी भाषण-स्पर्धा

कर्नाटक महिला हिन्दीसेवा समिति, बेंगलोर द्वारा आयोजित हिन्दी भाषण-स्पर्धा का सभारम्भ 29.10.2006 को **प्रो० डॉ० विमला,** अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बेंगलोर विश्वविद्यालय ने किया। अध्यक्षता डॉ० राधाकृष्णमूर्ति ने की। मुख्य अतिथि **श्री वी०एस० कृष्णाय्यर,** पूर्व मंत्री, कर्नाटक सरकार एवं उपाध्यक्ष, कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति, बेंगलोर ने पुरस्कार वितरण किया।

सारा लोहा उन लोगों का, अपनी केवल धार

हिन्दी अकादमी, दिल्ली के तत्त्वावधान में डॉ० केदारनाथ सिंह की अध्यक्षता में हिन्दी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर अरुण कमल ने काव्य पाठ किया। अपनी अन्य कविताओं के साथ भगत सिंह के शताब्दी वर्ष पर उन्हें याद करते हुए अपनी 'जिन्दाबाद' कविता पढ़ी।

अध्यक्ष डॉ० केदारनाथ सिंह ने कहा—सैकड़ों आवाजों के बीच में अलग से पहचाने जाने वाली एक आवाज अरुण कमल है।

पुस्तकालयों,
शिक्षा संस्थाओं
के लिए
साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह
तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम
विश्वविद्यालय प्रकाशन
विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail: sales@vvpbooks.com

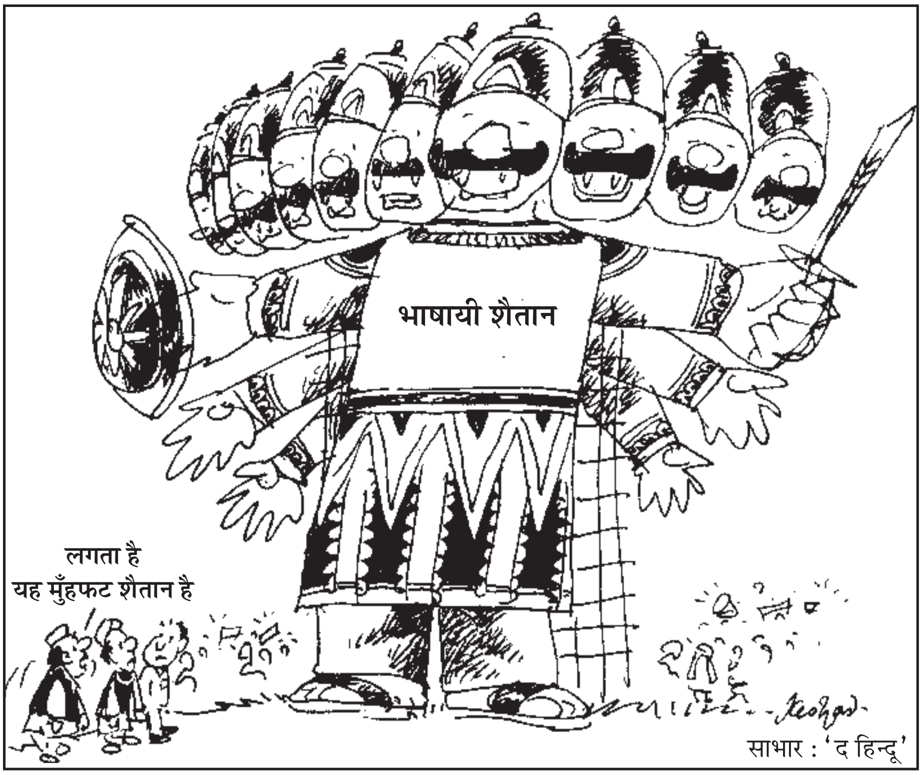

साभार : 'द हिन्दू'

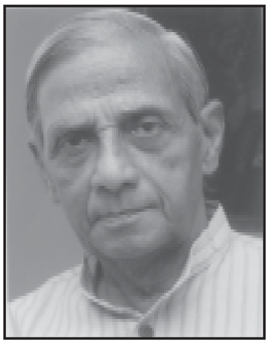

परमानंद श्रीवास्तव

जन्म : 10 फरवरी, 1935, बाँसगाँव (गोरखपुर)

शिक्षा : प्रायः गोरखपुर में, एम०ए० हिन्दी, पी-एच०डी० : हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया, डी०लिट्० : खड़ी बोली हिन्दी काव्यभाषा, **अध्यापन :** सेंट एण्ड्रयूज़ कॉलेज, गोरखपुर 1957 से 1968, गोरखपुर विश्वविद्यालय : 1968 से 1995, बर्दवान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल में 1988-89, संस्थापक अध्यक्ष, प्रेमचंदपीठ से अवकाशप्राप्त, 1995।

कृतियाँ : *कविता*—उजली हँसी के छोर पर, अगली शताब्दी के बारे में, चौथा शब्द, एक अनापक का वृत्तांत, *कहानी संग्रह*—रुका हुआ समय, *डायरी*—एक विस्थापित की डायरी, *निबन्ध*—दूसरा सौन्दर्यशास्त्र क्यों, अँधेरे कुएँ से आवाज़, *आलोचना*—नयी कविता का परिप्रेक्ष्य, कवि मर्म और काव्यभाषा, कविता का मर्म और काव्यभाषा, समकालीन कविता का व्याकरण, समकालीन कविता का यथार्थ, जैनेन्द्र और उनके उपन्यास, हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया, उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा, शब्द और मनुष्य, कविता का अर्थात्, कविता का उत्तर जीवन, *मोनोग्राफ*—'निराला' साहित्य अकादमी का प्रकाशन, 'जायसी' साहित्य अकादमी, *चयन*—सम्पादित : समकालीन हिन्दी कविता : साहित्य अकादमी, समकालीन हिन्दी आलोचना : साहित्य अकादमी, *सम्पादित*—महादेवी, शेखर एक जीवनी : पुनः पाठ, गोदान : पुनः पाठ तथा अन्य।

सदस्य : साधारण सभा, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, 1982-1992।

पूर्व सम्पादक : 'आलोचना' त्रैमासिक, दिल्ली।

रुचि : यात्राएँ, डायरी लेखन आदि।

सम्मान : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली द्वारा 1996 में एमेरिटस प्रोफेसर मनोनीत, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का साहित्य भूषण सम्मान 2005, विमला देवी फाउण्डेशन का द्विजदेव सम्मान 2005, **के०के० बिड़ला फाउण्डेशन, नयी दिल्ली का व्यास सम्मान 2006।**

सम्प्रति : अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ, अध्यक्ष, प्रेमचंद साहित्य संस्थान, गोरखपुर।

आवासीय पता : बी-70, आवास विकास
कॉलोनी, सूरजकुण्ड, गोरखपुर-273 015
फोन : 0551-2256001
मोबाइल : 94153-14500

सम्मान-पुरस्कार

18 साहित्यकार सम्मानित

मध्यप्रदेश के राज्यपाल डॉ० बलराम जाखड़ ने शनिवार, 14 अक्टूबर 2006 को मध्यप्रदेश लेखक संघ द्वारा आयोजित समारोह में 18 साहित्यकारों को विभिन्न 13 सम्मानों से सम्मानित किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि यह दु:ख की बात है कि **आजकल लोगों ने पढ़ना बन्द कर दिया है। वे कम्प्यूटर और टीवी में उलझ कर रह गए हैं।**

उन्होंने कहा कि परिपक्व मस्तिष्क और अनुभव के धनी साहित्यकारों की लेखनी से ही बौद्धिक विकास होता है। साहित्यकारों के सम्मान को और बेहतर करने के लिए वे शासन को लिखेंगे। समारोह की अध्यक्षता महापौर सुनील सूद ने की। मध्यप्रदेश लेखक संघ के अध्यक्ष बटुक चतुर्वेदी ने संस्था के बारे में जानकारी दी। सम्मानित साहित्यकारों की तरफ से जयकुमार जलज ने अपनी बात रखी। राजेन्द्र जोशी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन कैलाशचन्द्र जायसवाल ने किया।

अक्षर साहित्य सम्मान : नर्मदेश भावसार (विदिशा), डॉ० जयकुमार जलत (रतलाम), प्रेमशंकर रघुवंशी (हरदा), आचार्य भगवत दुबे (जबलपुर), **डॉ० सन्तोष तिवारी समीक्षा सम्मान :** डॉ० महेन्द्र भटनागर (ग्वालियर), **माणिक वर्मा व्यंग्य सम्मान :** डॉ० शिव शर्मा (उज्जैन), **पुष्कर जोशी स्मृति सम्मान :** सदाशिव कौतुक (इन्दौर), **देवकीनन्दन माहेश्वरी स्मृति सम्मान :** चन्द्रभान राही, **काशीबाई मेहता स्मृति सम्मान :** कुमकुम गुप्ता, **कस्तूरीदेवी चतुर्वेदी सम्मान :** श्रीमती विनोदकुमारी तिवारी, **चन्द्रप्रकाश जायसवाल बाल सम्मान :** परशुराम शुक्ल (दतिया), **पार्वतीदेवी अहिन्दीभाषी सम्मान :** रुपकुमार घायल (बैरागढ़े), **हरिओम चौबे स्मृति सम्मान :** मयंक श्रीवास्तव, **कमला चौबे सम्मान :** डॉ० संध्या जैन श्रुती (जबलपुर), **मालती बसंत नवलेखिका सम्मान :** कृति पाठक, **सारस्वत सम्मान :** श्रीराम परिहार (खंडवा), रमेशचंद्र खरे (दमोह) और मुकेश वर्मा (भोपाल)।

अन्य प्रदेशों की अपेक्षा मध्यप्रदेश साहित्य और साहित्यकार की दृष्टि से अधिक प्रबुद्ध है।

राष्ट्रधर्म हिन्दी सेवा सम्मान 2006

स्व० श्री श्रीकृष्णदास महेश्वरी की स्मृति में स्थापित अहिन्दीभाषी क्षेत्र के दो हिन्दीसेवियों को उनके समग्र अवदान के लिए 21,000 रुपये का सम्मान।

सम्मानित साहित्यकार—**डॉ० शंकरलाल पुरोहित** (भुवनेश्वर), उड़िया भाषा, **डॉ० राधागोविन्द थोडाम** (इम्फाल), पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार, शिक्षण-प्रशिक्षण तथा लेखन-प्रकाशन।

राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान 2006

10,000 रुपये का सम्मान

'अज्ञेय से अरुण कमल तक' (कविता) : डॉ० सन्तोषकुमार तिवारी (सागर), 'दहक' (उपन्यास) : अञ्जली भारती (लखनऊ)।

सीताराम महर्षि को डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति सम्मान

डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति सम्मान-तृतीय-2006 से अलंकृत श्री सीताराम महर्षि (बायें से दूसरे) को श्रीफल एवं सम्मान राशि भेंट करती हुई स्व० डॉ० राधेश्याम शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमवती शर्मा (दायें से तृतीय) मध्य में खड़े हैं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० महेशचंद्र शर्मा। बायीं ओर खड़े हैं संस्थान अध्यक्ष राधेश्याम धूत एवं दायीं ओर खड़े हैं कार्यक्रम के आयोजक डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा एवं उनकी पत्नी मंगला शर्मा।

हिन्दी एवं राजस्थानी के प्रख्यात साहित्यकार रतनगढ़ (चूरू, राजस्थान) के **सीताराम महर्षि** को 'डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति सम्मान : तृतीय 2006' 28 अगस्त 2006 को चर्च रोड, जयपुर स्थित रोटरी सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध विचारक, लेखक, पत्रकार **डॉ० महेशचन्द्र शर्मा** थे। अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री एवं राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के अध्यक्ष डॉ० कृष्णचन्द्र गोस्वामी कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। संस्कृत के पुरोधा मनीषी **देवर्षि कलानाथ शास्त्री** ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

'डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति सम्मान-तृतीय-2006' के रूप में श्री सीताराम महर्षि को सम्मान-स्वरूप प्रशस्तिका, उत्तरीय (शॉल) एवं 11,000 रुपये की राशि भेंट की गई। डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति संस्थान के अध्यक्ष **राधेश्याम धूत** ने सीताराम महर्षि को प्रशस्तिका भेंट की, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० महेशचन्द्र शर्मा ने उन्हें उत्तरीय (शॉल) पहनाया तथा स्व० डॉ० राधेश्याम शर्मा की धर्मपत्नी **श्रीमती प्रेमवती शर्मा** एवं उनके पुत्र **डॉ० गोपाल शर्मा** ने उन्हें श्रीफल के साथ 11,000 रुपये की राशि भेंट की।

कार्यक्रम के आरम्भ में स्मृति-संस्थान के अध्यक्ष राधेश्याम धूत ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि श्री सीताराम महर्षि एक अनूठे साहित्यकार हैं जो रेतीले प्रदेश रतनगढ़ में बैठकर सारस्वत साधना कर रहे हैं। स्मृति-संस्थान के सचिव डॉ० विजय नागपाल 'नाविक' ने स्व० डॉ० राधेश्याम शर्मा की प्रेरक स्मृति को प्रणाम करते हुए उनको समर्पित करते हुए चार पंक्तियाँ सुनाई : ''स्याह रात में रोशन किताब छोड़ गया, चला गया है मगर अपने ख्वाब़ छोड़ गया, हजार जब्र हों लेकिन ये फैसला है अटल, वो ज़ेहन में एक इन्कलाब छोड़ गया।''

क़मर मेवाड़ी सम्मानित

क़मर मेवाड़ी को 'माजरा सम्मान' भेंट करते डॉ० हेतु भारद्वाज

राजस्थान राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, जयपुर के तत्वावधान में लघु पत्रिका दिवस 9 सितम्बर 2006 को दीपशिखा महाविद्यालय, जयपुर के सभागार में 'समय माजरा' परिवार द्वारा वरिष्ठ साहित्यकार और सम्बोधन के सम्पादक क़मर मेवाड़ी को 'माजरा सम्मान' से अलंकृत किया गया।

राजस्थान राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष डॉ० हेतु भारद्वाज ने कमर मेवाड़ी को प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर 'माजरा सम्मान' से सम्मानित किया। समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात साहित्यकार एवं विधिवेता मरूधर मृदुल ने शाल ओढ़ाया तथा प्रतिष्ठित कवि वीर सक्सेना ने क़मर मेवाड़ी को ग्यारह हजार रुपये का ड्राफ्ट भेंट किया।

प्रो० कुसुमलता केडिया को डॉ० हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान

श्री बड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय, कोलकाता द्वारा प्रवर्तित डॉ० हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान प्रख्यात समाज वैज्ञानिक एवं विकास अर्थशास्त्री प्रो० कुसुमलता केडिया (वाराणसी) को प्रदान किया गया। पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ० मुरलीमनोहर जोशी ने उन्हें यह सम्मान तथा 51 हजार रुपये का चेक महाजाति सदन प्रेक्षागृह के सभागार में आयोजित भव्य समारोह में प्रदान किया। प्रो० केडिया को इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री मोहनराव भागवत ने संस्था की ओर से शाल तथा श्रीफल प्रदान किया। समारोह की अध्यक्षता डॉ० मुरलीमनोहर जोशी ने की।

डॉ० आदित्य प्रचण्डिया को 'साहित्यश्री' समान

डॉ० राकेश गुप्त द्वारा अपनी धर्मपत्नी तारावली गुप्त की स्मृति में सन् 2001 में स्थापित 'साहित्यश्री' सम्मान इस वर्ष दयालबाग विश्वविद्यालय, आगरा के हिन्दी विभाग में वरिष्ठ रीडर डॉ० आदित्य प्रचण्डिया को देने का निश्चय किया गया है। इसके निर्णायक मण्डल में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० रामदरश मिश्र (दिल्ली), वरिष्ठ आलोचक डॉ० त्रिभुवन सिंह (वाराणसी) तथा वयोवृद्ध विद्वान् डॉ० राकेश गुप्त हैं।

डॉ० आदित्य प्रचण्डिया को यह पुरस्कार 5100 रुपये की राशि के साथ दिनांक 17 दिसम्बर 2006 को ग्रन्थायन द्वारा आयोजित एक समारोह में प्रदान किया जाएगा।

'उपलब्धि' व 'बच्चन' सम्मान

गीतकार बलवीर सिंह 'रंग' की स्मृति में गन्ना संस्थान, लखनऊ में रंग स्मृति समारोह का सर्वोच्च सम्मान 'उपलब्धि 2006 सम्मान' से **आत्मप्रकाश शुक्ल** तथा **डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र** को नामित सम्मान हरिवंशराय बच्चन सम्मान से विभूषित किया गया। सर्वोच्च सम्मान के लिए 11 हजार एक सौ ग्यारह तथा नामित सम्मान के लिए 11 हजार रुपये प्रदान किये गये। सम्मानित विभूतियों को अंगवस्त्र तथा प्रतीक चिह्न भी मिले।

सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि गीतकार **गोपालदास नीरज,** अध्यक्षता **सोम ठाकुर** तथा विशिष्ट अतिथि **केशरीनाथ त्रिपाठी** थे। श्री त्रिपाठी ने कविता की वाचिक परम्परा पर कहा कि कविता अनेक रूपों में प्रकट होती है जैसा रूप होगा कविता से वैसी ही अभिव्यक्ति होगी।

उनका मानना है कि वाचिक परम्परा को आगे बढ़ाने से कविता को नई शक्ति प्रदान की जा सकती है।

उत्तर प्रदेश में 11 विभूतियों को यशभारती

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने 20 नवम्बर 2006 को, राममनोहर लोहिया पार्क में, विशिष्ट सेवाओं में योगदान करने वाले 11 विशिष्ट विभूतियों को प्रदेश के सर्वोच्च सम्मान 'यशभारती' से सम्मानित किया। सम्मान प्राप्त करने वालों में गाजीपुर पूर्वाञ्चल के प्रमुख शिक्षक तथा साहित्यकार डॉ० विवेकी राय, मैनपुरी के उदयप्रताप सिंह (सांसद/साहित्यकार), फैजाबाद के शीतला सिंह (पत्रकार), लखनऊ के डॉ० योगेश प्रवीन (शिक्षक/साहित्यकार), जगदीश काली रमन (पहलवान), अभिषेक बच्चन (अभिनेता), गोरखपुर के तालुकदार यादव (कुश्ती), इलाहाबाद के मोहम्मद कैफ (क्रिकेट), बड़ौत (बागपत) के शौकिन्द्र तोमर (कुश्ती) और राजीव तोमर (खिलाड़ी) तथा गाजीपुर के विजयकुमार (पत्रकार) हैं।

सम्मानस्वरूप पाँच लाख रुपये, शाल एवं अभिनन्दन-पत्र प्रदान किया गया।

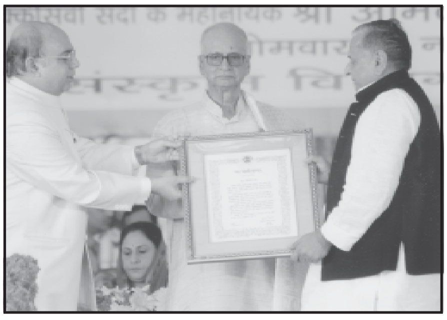

विवेकी राय गाजीपुर के प्रमुख साहित्यकार हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में ग्रामीण भारत का दिग्दर्शन कराया है। 'मनबोध मास्टर की डायरी' में फीचर, रिपोर्ताज, कहानी, ललित निबन्ध, रेखाचित्र, संस्मरण, हास्य-व्यंग्य, यात्रावृत्त आदि गद्य की अनेक सशक्त विधाएँ समाहित हैं।

विवेकीरायजी के अब तक 10 उपन्यास, 11 ललित निबन्ध, 9 कहानी-संग्रह, 6 कविता संग्रह, 13 समीक्षा ग्रन्थ तथा सात रचनाएँ लोकभाषा भोजपुरी में प्रकाशित हो चुकी हैं। आपकी अनेक रचनाओं का भारत की अनेक भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। विवेकीरायजी को समय-समय पर अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें प्रमुख है—उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का 'प्रेमचन्द' तथा 'साहित्यभूषण पुरस्कार', बिहार राजभाषा विभाग द्वारा 'आचार्य शिवपूजन सहाय पुरस्कार', मध्यप्रदेश शासन द्वारा 'विद्या वाचस्पति' आदि। 19 नवम्बर 1924 ई० को गाजीपुर-बलिया की सीमा भरौली गाँव में जन्मे विवेकीराय आज भी सक्रिय हैं।

विजयकुमार ने 'आज' से पत्रकारिता की यात्रा प्रारम्भ कर 'जनवार्ता' और फिर स्वप्रकाशित एवं सम्पादित 'गाजीपुर टाइम्स' द्वारा पूर्वाञ्चल को वाणी प्रदान की। ऐसे साहित्यकार तथा पत्रकार को 'यशभारती' सम्मान निश्चय ही यश प्राप्त होगा।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा हरिवंशराय बच्चन की स्मृति में गीतकारों के लिए पुरस्कार

अभिनेता अभिषेक बच्चन को दिये गये पुरस्कार को लेकर प्रदेश में असंतोषस्वरूप विवाद उपस्थित हुआ। अभिषेक बच्चन की उत्तर प्रदेश में क्या भूमिका है? हरिवंशराय बच्चन, अमिताभ बच्चन और जया बच्चन पुरस्कृत किये जा चुके हैं क्या उसी परिवार की परम्परा का निर्वाह है? इस असंतोष को अनुभव करते हुए अभिषेक बच्चन ने पाँच लाख रुपये की धनराशि उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान को दे दी और यह इच्छा व्यक्त की कि उनके दादा स्व० हरिवंशराय बच्चन की स्मृति में गीतकारों के लिए पुरस्कार प्रारम्भ किया जाय। अभिषेक बच्चन के पिता अमिताभ बच्चन ने कहा कि हम तो बाराती बनके आए हैं क्योंकि अभिषेक के सिर पर सेहरा बँध रहा है।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा संचालित पुरस्कारों की घोषणा

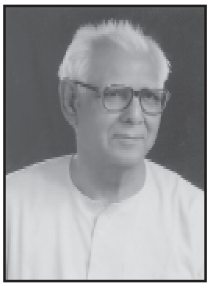

डॉ० रामदरश मिश्र को भारत भारती सम्मान

वर्ष 2005 का भारत भारती सम्मान हिन्दी के यशस्वी लेखक, रचनाकार 82 वर्षीय डॉ० रामदरश मिश्र को दिया जायगा। इस सर्वोच्च सम्मान के साथ 2 लाख 51 हजार की राशि प्रदान की जायगी।

अन्य सम्मान पुरस्कार (प्रत्येक दो लाख रुपये)

लोहिया सम्मान : डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल, गाँधी सम्मान : कामता प्रसाद, हिन्दी गौरव सम्मान : गोपाल चतुर्वेदी, पं० दीनदयाल उपाध्याय सम्मान : डॉ० अर्जुन दास केसरी, अवन्तिबाई सम्मान : श्री बलबीर सिंह 'करुण'।

सौहार्द सम्मान

(प्रादेशिक भाषाओं के रचनकारों को)

प्रत्येक को एक लाख एक हजार

डॉ० विमला मुंशी (कश्मीरी), के० विक्रम राव (तेलुगु), विश्वनाथ सचदेव (पंजाबी), आबिद सुरती (गुजराती), भगवान अटलाणी (सिन्धी)।

मधु लिमये सम्मान (वर्ष 2006) (एक लाख)

डॉ० श्रीपाल सिंह 'क्षेम'

साहित्यभूषण सम्मान

(प्रत्येक को 50 हजार रुपये)

कुमार रवीन्द्र, डॉ० कुसुम अंसल, छविनाथ मिश्र, डॉ० धनंजय सिंह, नईम, डॉ० प्रभाकर श्रोत्रिय, आचार्य भाष्करानंद लोहनी, रवीन्द्र कालिया, डॉ० सत्यप्रकाश मिश्र, हृदयनारायण मल्होत्रा 'हृदयेश', अमरनाथ शुक्ल तथा अमृत भारती।

50 हजार के अन्य पुरस्कार

कला भूषण सम्मान : डॉ० देवेन्द्रराज अंकुर
विद्या भूषण : डॉ० प्रतिमा अस्थाना
विज्ञान भूषण : डॉ० अनिल चतुर्वेदी
पत्रकारिता भूषण : नन्दकिशोर नौटियाल
प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण सम्मान :
सत्येन्द्र श्रीवास्तव

25 हजार के विश्वविद्यालय स्तरीय पुरस्कार

डॉ० कृष्णचन्द्र लाल, प्रो० जय सिंह नीरद

साहित्य पुरस्कार

वर्ष 2005 में प्रकाशित महिला रचनाकार की कथा कृति के लिए डॉ० रश्मि कुमार को उनकी रचना 'मन न भये दस बीस' पर पं० बद्रीप्रसाद शिंगलू स्मृति सम्मान दिया जायेगा।

वर्ष 2003 में प्रकाशित पुस्तकों पर **नामित पुरस्कार** (प्रत्येक को 20 हजार) के लिए पच्चीस लेखकों को सम्मानित किया जाएगा। इसमें प्रबोध कुमार गोविल को 'सूर पुरस्कार', डॉ० सुशील सिद्धार्थ को 'मलिक मुहम्मद जायसी पुरस्कार' रामानन्द राय 'गंवार' को 'राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार', शिवानन्द मिश्र 'बुन्देला' को 'मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार', नन्दकुमार मनोचा 'वारिज' को 'कबीर पुरस्कार', हरिश्चन्द्र पाण्डेय 'हरि' को 'तुलसी पुरस्कार', डॉ० रेखा चतुर्वेदी को 'भगवानदास पुरस्कार', डॉ० अमर ज्योति सिंह को 'गणेशशंकर विद्यार्थी पुरस्कार', डॉ० रामकृपाल तिवारी को 'श्यामसुन्दरदास पुरस्कार', डॉ० एस०के० पाण्डेय को 'बीरबल साहनी पुरस्कार', दयानन्द पाण्डेय को 'प्रेमचंद पुरस्कार', डॉ० किशोरीशरण शर्मा को 'जयशंकरप्रसाद पुरस्कार', पंकज चतुर्वेदी को 'रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार', डॉ० हेरम्ब चतुर्वेदी को 'आचार्य नरेन्द्रदेव पुरस्कार', सुधांशु उपाध्याय को 'निराला पुरस्कार', बच्चन सिंह को 'बाबूराव विष्णु पराड़कर पुरस्कार', रोशन प्रेम योगी को 'बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार', डॉ० भालचन्द्र तिवारी को 'यशपाल पुरस्कार', प्रो० विजयकुमार पाण्डे को 'हजारीप्रसाद द्विवेदी पुरस्कार', डॉ० रामबहादुर मिश्र को 'पं० रामनरेश त्रिपाठी पुरस्कार', डॉ० विक्रम सिंह को 'सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' पुरस्कार', शैलेन्द्र सागर को 'सरस्वती पुरस्कार', निवेदिता बुढ़लाकोटि को 'महादेवी वर्मा पुरस्कार', डॉ० राजकुमार शर्मा को 'पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी पुरस्कार' तथा जितेन्द्र श्रीवास्तव को 'विजयदेव नारायण साही पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा।

वर्ष 2003 में प्रकाशित पुस्तकों के लिए 'सर्जना पुरस्कार' (प्रत्येक को आठ हजार) रत्नप्रकाश शील, आद्याप्रसाद उन्मत, बृजमोहनप्रसाद 'अनारी', विनय वाजपेयी, ब्रजभूषण सिंह गौतम 'अनुराग', दीनानाथ, डॉ० शान्ति देवबाला, सुधाकर अदीब, केशवप्रसाद वाजपेयी, डॉ० रामाश्रय सविता, डॉ० अंगनेलाल, राजबहादुर 'विकल', डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह, डॉ० शान्ति देवबाला, राधावल्लभ द्विवेदी, डॉ० अमरबहादुर सिंह, डॉ० जयनारायण तथा डॉ० मंजु शुक्ल को दिया जायेगा।

संगोष्ठी/लोकार्पण

डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति व्याख्यान तृतीय पुष्प - 2006

डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति व्याख्यान–
तृतीय पुष्प–2006 प्रस्तुत करते हुए
डॉ० महेशचन्द्र शर्मा

डॉ० राधेश्याम शर्मा स्मृति व्याख्यान के तृतीय पुष्प (2006) के रूप में 28 अगस्त 2006 को रोटरी भवन, चर्च रोड, सी–स्कीम, जयपुर में सुप्रसिद्ध विचारक, लेखक, सामाजिक एवं राजनीतिक कर्मी डॉ० महेशचन्द्र शर्मा ने 'भारतीय संस्कृति' विषय पर तेजस्वी और सूक्ष्मग्राही व्याख्यान प्रस्तुत किया।

''भारत में मानवीय मनोविज्ञान का बड़ा अद्‍भुत विश्लेषण हुआ है। भारतीय मनीषियों ने मनोविज्ञान को पहचान कर उसे संस्कृति के रूप में व्यक्त करने का प्रयास किया। भारत का संस्कार कहता है कि 'सद् एकं विप्राः बहुधा वदन्ति।' अनेक प्रकार से बखाना गया सत्य एक ही है। इसलिये भारत में विविधताओं का मंजुल समन्वय देखने को मिलता है।''

भारतीय साहित्य के तेजस्वी चारणी साहित्य

अखिल भारतीय साहित्य परिषद गुजरात प्रान्त एवं राजस्थानी भाषा साहित्य और सांस्कृतिक अकादमी, बीकानेर के संयुक्त उपक्रम से 'चारणी साहित्य : सांस्कृतिक सन्दर्भ' विषयी राष्ट्रीय परिसंवाद विराणी मूक–बधिर स्कूल राजकोट में आयोजित किया गया। 6 एवं 7 अक्टूबर को आयोजित इस द्वि–दिवसीय परिसंवाद में चारणी साहित्य के सांस्कृतिक अधिगम के विभिन्न पहलुओं पर सार्थक विचार–विमर्श किया गया। इसमें गुजरात एवं राजस्थान से आये हुए चारणी साहित्य के विद्वानों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

इस परिसंवाद के उद्‍घाटन समारोह के अध्यक्ष डॉ० कमलेश जोशीपुरा, कुलपति, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी, राजकोट एवं उद्‍घाटक के रूप में श्री प्रवीणभाई मणीयार, अतिथि विशेष के रूप में अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० बलवंत जानी, डॉ० नरेश वेद, राजस्थान अकादमी के सचिव डॉ० पृथ्वीराज रत्नु, उपाध्यक्ष श्री हनुमानजी दीक्षित तथा सेवानिवृत्त कलेक्टर श्री प्रवीणदान गढ़वी उपस्थित रहे।

परिसंवाद के विचार–विमर्श चार सत्रों में सम्पन्न हुई और इसमें प्रथम बैठक में अध्यक्ष डॉ० शक्तिदान कविया तथा मुख्य अतिथि श्री हनुमान दीक्षित की गरिमापूर्ण उपस्थिति में डॉ० बलवंत जानी ने 'चारणी साहित्य एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद', डॉ० भँवर सिंह सामोर ने 'चारणी साहित्य में शक्ति काव्य', डॉ० सी०पी० देवल ने 'वंश भास्कर : ऐतिहासिक सन्दर्भ' तथा पृथ्वीराज रत्नु ने 'चारणी साहित्य और स्वातंत्र्य संग्राम' विषयक शोधपत्र प्रस्तुत किए।

नयी कहानी के तीन आयाम का लोकार्पण

हिन्दी के सुप्रसिद्ध आलोचक **डॉ० भगवानदास वर्मा** की पुस्तक 'नयी कहानी के तीन आयाम' (सम्पादक : डॉ० साधना शाह) का लोकार्पण कवि–नाटककार **डॉ० नरेन्द्र मोहन** द्वारा औरंगाबाद के सरस्वती भुवन कला और महाविद्यालय में आयोजित हुआ। डॉ० नरेन्द्र मोहन ने कहा—लेखक की मृत्यु के बारह वर्ष बाद प्रकाशित यह कृति साहित्यिक और सांस्कृतिक दस्तावेज है। समीक्षक **मु०ब० शाह** ने कहा कि प्रस्तुत रचना के भीतर से रचना को भोगने का मूल्यांकन है। **प्रा० दिनकर बोरीकर** ने वर्माजी की कलात्मक संवेदनशीलता की सराहना की। अध्यक्ष **डॉ० चम्पालाल देसरडा** ने भगवानदास वर्मा के व्यक्तित्व और **डॉ० साधना शाह** के काम की सराहना की। प्रारम्भ पुस्तक की सम्पादक डॉ० साधना शाह ने अपना मंतव्य प्रस्तुत किया।

गिर्राज प्रसाद का लोकार्पण

लोकनाट्य नौटंकी के 91 वर्षीय वयोवृद्ध कलाकार गिर्राज प्रसाद पर डॉ० शरद नागर द्वारा लिखित एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली द्वारा रंग–व्यक्तित्व माला के अन्तर्गत प्रकाशित विनिबन्ध (मोनोग्राफ) गिर्राज प्रसाद का लोकार्पण हाल ही में लखनऊ में जयशंकरप्रसाद सभागार में मौजूद नाटक–रंगमंच, साहित्य व कला–जगत की समृद्ध उपस्थिति के बीच, वरिष्ठ रंगकर्मी एवं नाट्य निर्देशक पद्मश्री राज बिसारिया ने किया। समारोह की अध्यक्षता भातखण्डे संगीत संस्थान, समविश्वविद्यालय, लखनऊ के कुलपति डॉ० विद्याधर व्यास ने की।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक देवेन्द्रराज अंकुर ने गिर्राज प्रसाद को दिल्ली आमंत्रित कर उत्तर भारत की प्रतिनिधि लोकनाट्य विधा नौटंकी के उनके दीर्घकालीन अनुभवों से राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के छात्रों को लाभान्वित कराने का संकल्प व्यक्त किया। इस अवसर पर दिल्ली के रंगकर्मी और नाट्य निर्देशक दिनेश खन्ना मौजूद थे।

अभिनव प्रसंगवश के विशेषांक का लोकार्पण

'अभिनव प्रसंगवश' के डॉ० कुन्दनलाल उप्रेती पर केन्द्रित विशेषांक का लोकार्पण प्रख्यात व्यंग्यकार डॉ० गोपाल बाबू शर्मा ने किया। समारोह की अध्यक्षता डॉ० ब्रजेशकुमार पालीवाल ने की।

इस अवसर पर डॉ० कैलाशचन्द्र भाटिया, डॉ० हर्षनन्दिनी भाटिया, डॉ० उदयवीर शर्मा, डॉ० मंजु शर्मा, डॉ० रमेशकुमार, डॉ० प्रभाकर शर्मा, डॉ० प्रेमकुमार, डॉ० महेन्द्रकुमार मिश्र आदि ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। संचालन डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ ने किया।

अखिल भारतीय बालसाहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह

'बालवाटिका' (मासिक) द्वारा आयोजित द्विदिवसीय अखिल भारतीय बालसाहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि श्री लक्ष्मीनारायण डाड, अध्यक्ष नगर विकास न्यास, भीलवाड़ा, डॉ० बालशौरि रेड्डी, अध्यक्ष तमिलनाडु हिन्दी अकादमी, चेन्नई और पूर्व सम्पादक 'चंदा मामा', विशिष्ट अतिथि राजस्थान पत्रिका, भीलवाड़ा के सम्पादकीय प्रभारी दिनेश माथुर माथुर और मुरलीधर पाण्डे, अध्यक्ष, भीलवाड़ा कोऑपरेटिव बैंक, भीलवाड़ा थे। उद्‌घाटन सत्र में 'बालवाटिका' (मासिक) के सम्पादक तथा समारोह संयोजक डॉ० भैरूंलाल गर्ग ने कहा कि 'बालवाटिका' अपनी तरह की अकेली पत्रिका है, जिसमें बालकों के साथ-साथ बाल साहित्यकारों और शोधार्थियों के लिए भी विविध विधाओं से युक्त पर्याप्त सामग्री प्रकाशित की जाती है।

इस द्वि दिवसीय संगोष्ठी तथा सम्मान समारोह में डॉ० बालशौरि रेड्डी, पूर्व सम्पादक चंदामामा (चेन्नई), डॉ० रामनिवास मानव (हिसार), बाल प्रहरी (त्रैमासिक) के सम्पादक उदय किरौला (उत्तरांचल), जी०एस०के० शिष्ट विनोद (त्रैमा०) के सम्पादक अमरेन्द्रकुमार सिंह (बिहार), राजकिशोर सक्सेना 'राज' (नैनीताल), डॉ० बानो सरताज (महाराष्ट्र), राजस्थान साहित्य अकादमी की अध्यक्ष डॉ० (श्रीमती) अजित गुप्ता, विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी (पाली), श्री श्रीकृष्ण शर्मा (जयपुर), डॉ० रमेश मयंक, शिव मृदुल (चित्तौड़गढ़), नन्दकिशोर निर्झर (चित्तौड़गढ़), डॉ० देवेन्द्र कुमावत, जितेन्द्रशंकर बजाड़ (भींचोर), सत्यनारायण 'सत्य' (रायपुर), नंदकिशोर चतुर्वेदी, श्री राधेश्याम मेवाड़ी (बेगूं), सुश्री गरिमा (अल्मोड़ा), श्री रामदयाल (उदयपुर), म० शिवदान सिंह कारोही, श्रीमती राजकिरण सक्सेना समेत देशभर के सात राज्यों 50 बालसाहित्य रचनाकारों, सम्पादकों, प्रकाशकों ने भागीदारी की।

मध्यकालीन भारतीय साहित्य के दुर्लभ ग्रन्थ उपलब्ध

तिरुवाचक्रम [मणिक्कवाचर विरचित] देवनागरी लिपि में मूल तमिल और हिन्दी अनुवाद, भाग-1 अनुवादक : *डॉ० नागेश्वर सुन्दरम*	125.00
दिव्य प्रबन्ध [आलवारों की वाणियाँ] मूल तमिल और हिन्दी अनुवाद, भाग-1 पेरियालवार तिरुमोलि (संत विष्णुचित की रचनाएँ)	800.00
दिव्य प्रबन्ध [आलवारों की वाणियाँ] मूल तमिल और हिन्दी अनुवाद, भाग-2 (गोदा, कुलशेखर, भक्तिसार, भक्तांघ्रिरेण, मुनिवाहन मधुर कवि की रचनाएँ)	80.00
दिव्य प्रबन्ध [आलवारों की वाणियाँ] मूल तमिल और हिन्दी अनुवाद, भाग-3 विरमंगै आलवार (संत परकाल) की रचनाएँ	80.00
दिव्य प्रबन्ध [आलवारों की वाणियाँ] मूल तमिल और हिन्दी अनुवाद, भाग-4 तिरुमंगै आलवार (संत परकाल) की रचनाएँ	80.00
दिव्य प्रबन्ध [आलवारों की वाणियाँ] मूल तमिल और हिन्दी अनुवाद, भाग-4 तिरुवाय मोलि (उत्तरार्द्ध)	100.00
मध्ययुगीन हिन्दी काव्य में प्रयुक्त काव्य रूढ़ियों का अध्ययन *डॉ० देवनाथ चतुर्वेदी*	80.00
आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना *प्रो० ऊजो किम*	150.00

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी

इतिहास का दर्द
डॉ० श्यामकिशोर मिश्र 'श्रमजीवी'
(कविता-संग्रह)
प्रथम संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-531-5
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी
मूल्य : 90.00

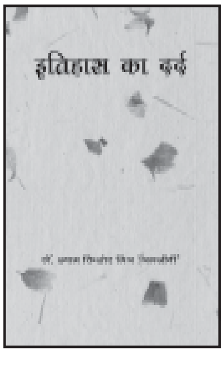

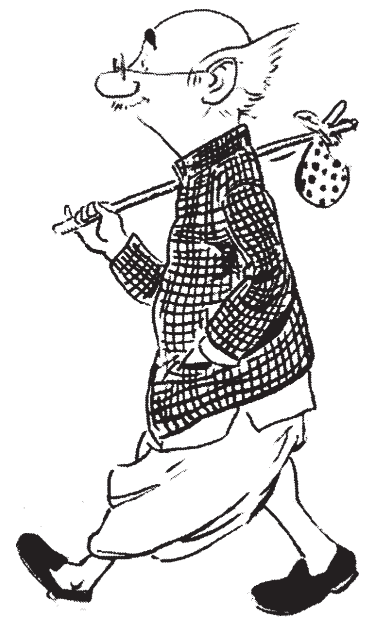

कार्टून विधा के विधाता,
आर०के० लक्ष्मण का प्रतीक 'कामन मैन'

पृष्ठ 1 का शेष

जिसे हम कहते हैं चैतन्यता
श्रेष्ठता, उदात्तता व जीवंतता

नहीं जाती कभी व्यर्थ
शब्द की साधना
जीता है मृत्यु के बाद भी
शब्द का साधक
इसके अलावा किसके बूते की बात है
मृत्यु के उपरान्त जी सकना?

पुस्तकें
काया नहीं प्राण होती हैं
जो वहन करती हैं
अपने में परम्पराओं को निरन्तर
होती हैं वे सनातन व चिरंतन

वे होती हैं
तो युग चलता है
अन्यथा पंगु हो जाती हैं मान्यताएँ
बेजान संस्कृति कराहती है
यत्र-तत्र...सर्वत्र
पनप नहीं सकतीं
आस्था व विश्वास की अट्टालिकाएँ

मित्र!
आओ इन्हें गले लगाएँ
इनकी अँगुली पकड़कर
ले चलें युग को
ज्ञान की नई बुलन्दियों
व विकास के नए
क्षितिज की ओर

—डॉ० दिनेश चमोला 'शैलेश'
देहरादून

पुस्तक समीक्षा

आधुनिक भारतीय कविता

डॉ० अवधेशनारायण मिश्र
डॉ० नन्दकिशोर पाण्डेय

आधुनिक भारतीय कविता

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-458-0
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी
मूल्य : 80.00

'आधुनिक भारतीय कविता' में असमिया, उर्दू, उड़िया, कन्नड, कश्मीरी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, बांग्ला, मराठी, मलयालम, सिन्धी और हिन्दी की महत्त्वपूर्ण आधुनिक कविताएँ संकलित हैं। इनके साथ ही मणिपुरी, मैथिली, राजस्थानी, संथाली और संस्कृत की भी आधुनिक कविताएँ हैं। एक तरह से यह संग्रह आधुनिक भारतीय कविता में मौजूद विभिन्न रंगों, रूपों और खुशबुओं को समझाते हुए सम्पूर्ण भारतीय कविता की एकता की खोज की है। मुझे यह संग्रह पढ़ते हुए प्रसन्नता इस बात से भी हुई कि मणिपुरी और संथाली में भी ऐसी कविताएँ लिखी जा रही हैं जिन्हें पढ़कर हिन्दी के आत्ममुग्ध कवि शर्म का अनुभव कर सकते हैं। मुझे लगता है कि भारतीय कविता में समकालीन परिदृश्य से परिचित होने के लिए इसे पढ़ा जाना चाहिए।

—**मैनेजर पाण्डेय,** 'आजकल', दिल्ली

"यह संग्रह बीसवीं शताब्दी की भारतीय कविता का प्रतिनिधि संग्रह बन पड़ा है, जिसके पीछे भारत की विभिन्न भाषाओं में एकता की तलाश तथा 'विश्व नीड़' बनने का सांस्कृतिक स्वप्न छिपा हुआ है। इस संग्रह को पढ़ना बीसवीं शताब्दी की हलचल से गुजरना बहुलतावादी सांस्कृतिक बिम्बों को आत्मसात् करना तो है अपने स्वप्न का पुनर्जन्म करना है।" —**संजय गौतम,** 'गाण्डीव', वाराणसी

हिन्दी उपन्यास

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

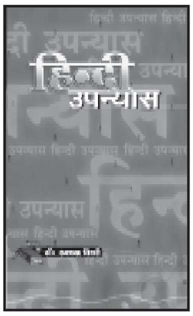

प्रथम संस्करण : 2006
ISBN : 81-7124-510-2
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी
मूल्य : सजिल्द : 160.00
अजिल्द : 100.00

डॉ० रामचन्द्र तिवारी ने हिन्दी आलोचना क्षेत्र को बहुत समृद्ध किया है। आपके डेढ़ दर्जन से ऊपर गम्भीर समीक्षात्मक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। सबसे नवीनतम कृति 'हिन्दी उपन्यास' है जो अभी हाल में ही छपी है। मूल रूप से इसकी सामग्री लेखक की बहुचर्चित विशाल कृति हिन्दी का गद्य साहित्य से ली गई किन्तु स्वतन्त्र कृति का आकार देने के लिए नयी आवश्यकताओं के अनुसार इसमें पर्याप्त परिवर्द्धन-संस्कार, सन्तुलन और समायोजन दिया गया है। इससे कृति की उपयोगिता बढ़ गई है। उपन्यास जैसी हिन्दी साहित्य की केन्द्रीय विधा के एक शताब्दी तक में विस्तार पाये हुए सृजनात्मक अवदान को दो सौ पृष्ठों में सार्थक, सटीक ढंग से समेटना वास्तव में बहुत कठिन काम था। गागर में सागर भरने जैसे इस काम को डॉ० तिवारी ने बहुत श्रमपूर्वक सम्पन्न कर दिया है। ऐतिहासिक क्रम और अन्वेषी-दृष्टि के साथ आगे बढ़ते हुए समीक्षक ने पुरानी धरोहरों और नयी उपलब्धियों के साथ न्याय करके चलने का प्रयत्न किया है। स्पष्ट है कि इस कार्य में बहुत यत्नपूर्वक कसाव दिया गया है। प्रत्येक लेखक के प्रामाणिक जीवन-वृत्त और उनकी उपलब्धियाँ इस रूप में प्रस्तुत की गई हैं कि उपन्यास साहित्य के इतिहास की परिवर्तित धाराएँ और उनकी पृथक् पहचान बनाती संवेदनाएँ पाठकीय चित्त पर उभरती चलती हैं। ग्रामांचलिकता से लेकर महानगरीय प्रभावों और विभिन्न वादों, प्रवादों की भी नवीनतम बहसें छूटी नहीं हैं। कुल मिलाकर कृति हिन्दी साहित्य, विशेषकर उपन्यास साहित्य के प्रेमी पाठकों, समीक्षकों और शोधकर्त्ताओं के लिए बहुत उपयोगी है।

—**डॉ० विवेकी राय**

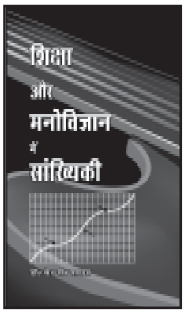

शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी

डॉ० कामताप्रसाद पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-448-3
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी
मूल्य : सजिल्द 150.00
अजिल्द : 100.00

प्रस्तुत पुस्तक 'शिक्षा एवं मनोविज्ञान' में प्रयुक्त होने वाले सांख्यिकी विधियों का सोदाहरण एवं स्पष्ट विवरण उपलब्ध कराने की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी एवं लोकप्रिय रचना है। कुल ग्यारह अध्यायों में सांख्यिकी विधियों के अनुप्रयोग, उनमें निहित मान्यताओं तथा अपेक्षित सावधानियों के प्रति संवेदनशील एवं सतर्कता विकसित करने में यह एक प्रभावी उपकरण के रूप में अभिकल्पित है। इसमें वर्णनात्मक एवं अनुमानपरक सांख्यिकी के तरीकों को शोध की परिस्थितियों से जोड़कर विद्यार्थियों की शोध-आधारित प्रदत्तों के विश्लेषण सम्बन्धी कौशल एवं अन्तर्दृष्टि को पैनी बनाने का प्रयास किया गया है।

पुस्तक की भाषा सरल, बोधगम्य एवं अभिव्यंजक है। प्रत्येक अध्याय के बाद अभ्यास एवं सद्य: प्रतिपुष्टि का विशेष प्रावधान है। जिससे सम्बन्धित सांख्यिकी अवधारणाओं के अनुप्रयोग करने की कुशलता सहज ही प्रबलित हो जाती है।

अथर्ववेद का काव्य

अथर्ववेद के चुने हुए सूक्तों का अनुवाद

अनुवादक
राधावल्लभ त्रिपाठी

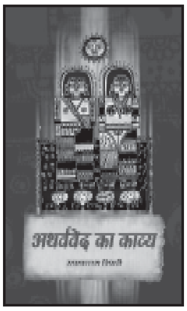

प्रथम संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-536-6
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी
मूल्य : 150.00

अथर्ववेद जादू टोना नहीं है, बल्कि मानव मात्र के अभ्युदय के लिये विद्या, मंत्र और उपयुक्त विधान है। जीवन दर्शन की गहन अभिव्यक्ति, उलटबासियों या पहेलियों के माध्यम से गूढ़ तत्त्वों के निरूपण तथा प्रतीकात्मकता में अथर्ववेद अद्वितीय है। आचार्य त्रिपाठी ने 35 शीर्षकों के अन्तर्गत अथर्ववेद की काव्यात्मक प्रस्तुत की है। ये शीर्षक हैं—

मधुविद्या, दीर्घायु:प्राप्ति, अभय, पशुसंवर्धन, शालानिर्माण, गोष्ठ (गोशाला), कृषि, समृद्धि-प्राप्ति, काम का बाण, साम्मनस्य (१) वृष्टि, गायें, गर्भाधान, कामात्मा (१), कामात्मा (२), गर्भदृंहण, साम्मनस्य (२), अघ्न्या, सौभाग्यवर्धन, शिशुसंवर्धन, अन्नसमृद्धि, शाला, सर्वाधारवर्णन, ज्येष्ठ ब्रह्म, भात, साँस, ब्रह्मचारी, उच्छिष्ट ब्रह्म, धरती, सूर्या का विवाह, अभय, दर्भ, काङ्क्षलसूक्त, देह, दीर्घायुष्य।

अथर्ववेद की यह काव्यात्मक प्रस्तुति अथर्ववेद के मर्म को बोधगम्य बनवाने में पूर्णतया सक्षम है।

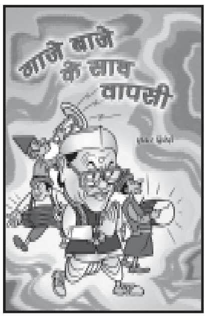

गाजे बाजे के साथ वापसी

पुष्कर द्विवेदी

प्रथम संस्करण : 2006
ISBN : 81-7124-532-3
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी
मूल्य : 90.00

व्यंग्य लेखन जिस तेजी के साथ हो रहा या होता है, उसका कारण है हमारे आस-पास की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक विसंगतियाँ। चाहे व्यक्तिगत स्तर पर हो, चाहे सामाजिक और चाहे राजनीति से प्रभावित हो,

सर्वत्र जिस प्रकार से असहजता और विद्रूप की स्थितियों से गुजरना हो रहा है, वही लेखक व्यंग्य के लिए बाध्य करता है।

आज व्यक्ति, समाज और देश में राजनीति, नेताओं व इससे जुड़े लोगों ने जो परिवेश रचा है, वह नितान्त अहेतुक है। अत्यन्त विडम्बनापूर्ण है, समाज व आम आदमी की वास्तविक तकलीफों की उपेक्षा कर हमारे तथाकथित जनसेवक निजी स्वार्थों, हवालों, घोटालों में घुट रहे हैं तथा देश की अस्मिता का गला घोंटते हुए सिर्फ सरकारें गिराने और बनाने में लगे हैं। ऐसी स्थितियाँ हों तो इन विसंगतियों को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। ये स्वत: व्यंग्य के माध्यम से प्रकट हो ही जाती हैं।

प्राचीन भारतीय प्रतिमा-विज्ञान एवं मूर्ति-कला

डॉ० बृजभूषण श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-528-5
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी

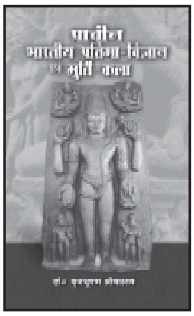

मूल्य : सजिल्द : 320.00 अजिल्द : 220.00

प्राचीन भारतीय प्रतिमाएँ और मूर्तियाँ, अपने युग के शिल्प वैशिष्ट्य और सौन्दर्यबोध मात्र को उजागर नहीं करतीं, अपितु सांस्कृतिक विचारों तथा भावनाओं को भी मुखर अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ प्रतिमा और मूर्ति की विभाजक रेखा का सीमांकन करते हुए प्रतिमा निर्माण-परम्परा को विश्लेषित करता है। विष्णु, शिव, सूर्य देवियों, गणपति, स्कन्द कार्तिकेय, जैन और बौद्ध प्रतिमाओं का विधानों एवं लक्षणों तथा उसके आधार पर निर्मित प्रतिमाओं का शास्त्रीय विवेचन और क्रमिक विकास को स्पष्ट करता है। साथ ही शैली और शिल्प सौष्ठव से सम्बन्धित विशेषताओं के आधार पर भी उनका मूल्यांकन करता है।

मूर्तिकला-खण्ड के अन्तर्गत सिन्धु सभ्यता की मूर्तिकला, मौर्य, शुङ्ग, सातवाहन, कुषाण, गुप्त, पाल एवं चन्देलकालीन मूर्तियों को ऐतिहासिक कालों के परिदृश्य में विविध कालों के अन्तर्गत अस्तित्व में आने वाली शैलियों के आधार पर संरचना, निर्माण शैली, तकनीक, शिल्प सौन्दर्य, भाव संबोध, सांकेतिकता, उद्देश्यपरकता, भावना, संवेग, विचार, क्षेत्रीयता, शिल्पी की निजता आदि के वृहत्तर सन्दर्भों में व्याख्यायित करता है।

बिखरे कलावशेषों का क्रमबद्ध संयोजन; शास्त्रीय लक्षणों पर निर्मित प्रतिमाओं का प्रतिमाशास्त्रीय परम्परा के आधार पर विश्लेषण; विविध कालों और शैलियों में निर्मित मूर्तियों की संरचना, सौन्दर्य और भावसंबोध की दृष्टि से बोधगम्य व्याख्या; प्रतिमाओं और मूर्तियों के आधार पर सांस्कृतिक विचारों एवं भावनाओं का उद्घाटन; 62 (बासठ) मूर्ति-चित्रों के माध्यम से प्रतिमाओं एवं मूर्तियों का सरल अभिज्ञान; सरल, सुबोध, भावगम्य और प्रवाहमयी भाषा इस ग्रन्थ का वैशिष्ट्य है।

पूर्व मध्यकालीन जैनकला

डॉ० अवधेश यादव

प्रथम संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-538-2
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 250.00

जैन कला का उद्भव दसवीं शताब्दी से पूर्व हुआ, किन्तु इसका विकास दसवीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य हुआ। इस ग्रन्थ में लेखक ने कहावली, प्रवचन स्त्रारोद्धार एवं तिलोणपण्णति 24 जिनों के स्वतंत्र लांछनों का उल्लेख करते हुए श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदायों में एकरूपता दर्शाने का प्रयास किया है और स्पष्ट किया है कि केवल सुपार्श्व, शीतल, अनन्त एवं अरनाथ में वैभिन्नय है। लेखक द्वारा 63 शलाका पुरुषों का निरूपण एवं 17 जैन महाविद्यालयों के महत्त्व को कला में रेखांकित करना एक नयी खोज है। जैन चित्रकला पर ग्रन्थों में जैन कलाकारों के कार्यों का सामान्यत: अनुल्लेख मिलता है, किन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ में लेखक ने जैन चित्रकला का विवरण प्रस्तुत करते हुए उसे 'जैन शैली' नाम प्रदान कर इतिहास जगत में नयी सोच का सृजन किया है। ग्रन्थ में चित्रों को आबद्ध कर विचार को समझने की दृष्टि से मूलाधार उपस्थित किया है।

—**डॉ० विजयकुमार पाण्डेय,** फैजाबाद

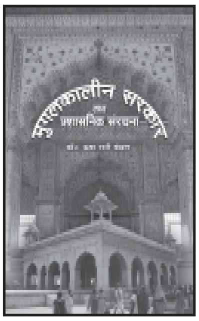

मुगलकालीन सरकार तथा प्रशासनिक संरचना

डॉ० ऊषारानी बंसल

प्रथम संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-535-8
विश्वविद्यालय प्रकाशन,
वाराणसी

मूल्य : 100.00

भारत पर मुगल आक्रान्ता बाबर के आक्रमण का इतिहास वस्तुत: समानधर्मी मुगल तथा अफगान संघर्ष की कहानी है। बाबर के बाद हुमायूँ का 1520 में राज्यारोहण तथा 1540 में अफगान संघर्ष की कहानी है। बाबर के बाद हुमायूँ का 1520 में राज्यारोहण तथा 1540 में अफगान शेरशाह द्वारा हुमायूँ को भारत से बाहर निकाल कर अफगान राज्य की स्थापना और पुन: 1555 में हुमायूँ का भारत में मुगल राज्य की स्थापना इसी अफगान मुगल संघर्ष का इतिहास है।

शेरशाह जो हुमायूँ तथा अकबर के अन्तराल में आया उसने एक निश्चित प्रशासनिक व्यवस्था प्रारम्भ करने का कार्य किया। मुगल वंश में अकबर ने एक निश्चित प्रशासनिक व्यवस्था तथा सरकार बनाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। यह व्यवस्था जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब के शासन काल में आंशिक परिवर्तनों के साथ चलती रही। परवर्ती मुगल शासकों में इतनी योग्यता ही न थी कि वह कोई नई प्रशासनिक व्यवस्था बना सके। अत: भारत में अंग्रेजी भारत की स्थापना (India under the crown)1857 तक अकबर द्वारा स्थापित प्रशासनिक व्यवस्था का ढाँचा आंशिक परिवर्तन के साथ बरकरार रहा।

इस पुस्तक में भारत में मुगल बादशाहों की प्रशासनिक संरचना तथा सरकार का वर्णन किया गया है। मध्यकालीन भारत के इतिहास पर अनेक पाठ्य-पुस्तकें हैं किन्तु मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था पर हिन्दी भाषा में पुस्तकों का अभाव ही है। इस अभाव को पूरा करने के लिए उपलब्ध सामग्री के आधार पर मुगलकालीन सरकार तथा प्रशासनिक व्यवस्था का वर्णन किया गया है।

पत्रकारिता की विजय-यात्रा

सम्पादक

डॉ० प्रमोदकुमार श्रीवास्तव 'अनंग'

प्रकाशक : भारत विकास परिषद, गाजीपुर

पृष्ठ : 199

यशभारती पुरस्कार से सम्मानित गाजीपुर के पत्रकार विजयकुमार के उपर्युक्त अभिनन्दन-ग्रन्थ में उनके पत्रकारी जीवन से सम्बन्धित अनेक घटनाओं का उल्लेख हुआ है। विजयकुमारजी ने पत्रकारिता के माध्यम से अपने गाजीपुर जनपद के लिए निष्पक्ष भाव से अनेक समस्याओं के समाधान के लिए अपनी लेखनी का सदुपयोग कर जनता के लिए जो सेवा की है, उसी के लिए यह अभिनन्दन-ग्रन्थ उनको समर्पित हुआ है। आंचलिक पत्रकारों के लिए विजयकुमारजी सुधी पत्रकार के रूप में जाने जाएँगे। —**पानासि**

मस्तक-भंजन भी चाहिए

बनारसीदास चतुर्वेदी अपने हाथ में हाकी स्टिक रखते थे। वे साबरमती आश्रम में थे, तभी पं० माखनलाल चतुर्वेदी आश्रम में आए। माखनलालजी ने स्टिक का नाम रखा मस्तक-भंजन। महात्मा गाँधी ने स्टिक देखकर कहा—''लाठी तो आपने बहुत मजबूत बाँध ली है।''

बनारसीदासजी ने कहा—पं० माखनलाल चतुर्वेदी ने इसका नाम मस्तक-भंजन रख दिया है।

महात्माजी ने तुरन्त ही मुस्कराकर कहा—सत्याग्रह आश्रम में एक मस्तक-भंजन भी चाहिए।

पीयूषिका (भक्ति-नीतिपरक दोहे)

डॉ० कृष्णमुरारी शर्मा

प्रकाशक : महादेवी ज्ञान केन्द्र, नीता प्रकाशन, नई दिल्ली-110 049

मूल्य : 20.00

डॉ० कृष्णमुरारी शर्मा ने अपनी कृति 'पीयूषिका' में वर्तमान समय को दोहों के माध्यम से चिह्नित किया है। जहाँ एक ओर उन्होंने द्रुतगति से बदलते मानवीय मूल्यों, अराजक माहौल, विस्मृत हो चुके भाव-बोध पर तीक्ष्ण दृष्टि रखी है। वहीं दूसरी ओर भक्ति तथा सामाजिक बुराइयों के परिमार्जन का सात्विक मार्ग भी ढूँढ़ा है जो इनकी निरपेक्षता को प्रदर्शित करती है।

कलालोक

मूल्यांकन के ताप से गुजरती राकेश वत्स की कुछ रचनाएँ

सम्पादक : **बलकेश**

प्रकाशन : वरुण इण्टरप्राइजेज, अम्बाला छावनी

मूल्य : 10.00

वत्सजी सातवें-आठवें दशक के सबसे चर्चित कथाकारों में हैं, जिन्होंने शुरू से किसी न किसी रूप में मौजूदा व्यवस्था का विरोध किया है। परवशता या विवशता को शैतानी हवस की देन मानते हैं। यही कारण है कि 'ईवल फ़ोर्सेज' पर यह अपनी रचनाओं के माध्यम से खुलकर आक्रमण करते हैं।

किवाड़ खोलती है कविता

रमेशकुमार त्रिपाठी

प्रकाशक : आलोक प्रकाशन, ९९ए/150, लूकरगंज, इलाहाबाद

मूल्य : 120.00

कल क्या होगा पता नहीं
कल की योजनाएँ
बना ली हैं आज (पृ० 11)

प्रखर चिन्तक और प्रतिष्ठित कवि डॉ० रमेशकुमार त्रिपाठी हिन्दी कविता के सुपरिचित हस्ताक्षर हैं। 'किवाड़ खोलती है कविता' कवि के साहित्यिक यात्रा का आठवाँ पड़ाव है।

इस काव्यकृति में छोटी बड़ी कुल 106 कविताएँ हैं। सम्पूर्ण कविताओं पर रचनाकार के व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव है। इसीलिए रचनाओं में संवेदनशीलता, चिन्तनशीलता, अध्ययनशीलता, दार्शनिकता, गम्भीरता, निर्भीकता, सहजता एवं सरलता का परिचय मिलता है।

नहीं करना है मन कमजोर
भ्रामक, मिथ्या
मुलम्मे की परतम में लिपटी
भविष्यवाणियों से
जोंक की तरह चिपककर (पृ० 7)

संवेदनशील कवि का जीवन रायबरेली के छोटे से गाँव मुबारकपुर से जुड़ा है। इसलिए इनकी कविताओं में ग्राम्य-जीवन की बातें खुलकर आई हैं, जो कि कवि के विज़नरी इंटेसिटी से परिचित कराती हैं। इन कविताओं में गाँव को गहने-जोड़ने की व्याकुलता का आन्तरिक साक्ष्य स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है।

यह संग्रह कवि के अनुभवों का सांसारिक दस्तावेज है, जिसमें जीवन के विविध राग-रंगों के फूल झरते हैं।

पुस्तक-प्राप्ति

किसान चेतना और प्रेमचन्द का साहित्य : राधेगोविन्द शाही

प्रकाशक : लोकायत प्रकाशन, एच० 2/3, नरिया, बीएचयू, वाराणसी

तुलसीदास के साहित्य में लोक और शास्त्र : वन्दना शाही

प्रकाशक : लोकायत प्रकाशन, एच० 2/3, नरिया, बीएचयू, वाराणसी

वैदिक संस्कृति में अंकों का महत्त्व : मदनमोहन बिहानी

मानस में रूप तत्व : कैलाश त्रिपाठी

कर्म सिद्धान्त : कृष्णचन्द्र टवाणी

प्रकाशक : ज्ञान-मन्दिर, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 7 **दिसम्बर 2006** **अंक : 12**

प्रधान संपादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003
RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA
PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi.: (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**